

>

Title: Further discussion on the motion for consideration of the Tourism Promotion Corporation of India Bill, 2015 (Discussion not concluded).

श्री निशिकान्त दुबे (गोड्डा): धन्यवाद सभापति महोदय । मैं सबसे पहले तो पूरी सरकार और खासकर मैं अपने चीफ व्हिप अनुराग सिंह ठाकुर का शुक्रगुजार हूँ कि उन लोगों के सहयोग से मैं इस बिल को इंट्रोड्यूस कर पाया तथा इस पर एक चर्चा स्टार्ट हुई । दूसरी, मेरे लिए दोहरी खुशी की बात यह है कि वर्ष 2014 का प्राइवेट मैम्बर बिल का जो डिस्कशन है, वर्ष 2014 में जब हम सभी लोग 16 वीं लोकसभा में आए तो 16 वीं लोकसभा में जिसका पहला बिल इस पार्लियामेंट में डिस्कस हुआ, वह मेरा ही बिल था । आज लगता है कि यह मेरा आखिरी बिल होगा तो कहां से शुरू और कहां से खत्म करूँ? वह जो गाना है, वह मेरे ऊपर ही लागू होता है । वर्ष 2014 से लेकर वर्ष 2019 तक मेरे बिल से ही शुरू हुआ था और मेरे बिल से ही पार्लियामेंट की 16वीं लोकसभा का अवसान होगा। भैंरो जी कह रहे हैं कि अगले सत्र, अगली 17वीं लोकसभा में आप से ही शुरू होगा । पहला श्राप इन्होंने यही दे दिया कि आप मंत्री बनने वाले नहीं हैं । ... (व्यवधान)

सभापति महोदय, सी.बी. श्रीवास्तव साहब ने एक बहुत अच्छी कविता लिखी है । वह पूरी कविता मैं पढ़ता चाहता हूँ । इसी में टूरिज्म क्या है? टूरिज्म का दर्द क्या है? देश में टूरिज्म के बारे में हम कितने प्रभावी हैं, कितना काम करना चाहते हैं? टूरिज्म का पोटेंशियल क्या है? इस कविता से यह पूरी तरह से समझ में आता है । उन्होंने लिखा है कि:

बंधी नियमित जिंदगी से, होती सबको घुटन,

इससे मन बहलाव के लिए, हित है पर्यटन,

तेज गति के वाहनों से, सुलभ अब आवागमन,

घूमने जाने का इससे, बढ़ा दिखता है चलन ।

यदि आप देखेंगे कि पिछले 4-4.5 साल में, माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी की सरकार आने के बाद यदि किसी चीज़ पर हमने बहुत ज्यादा खर्चा किया या दिखाई दे रहा है तो वह इन्फ्रास्ट्रक्चर है। आप यदि इस कविता के माध्यम से देखेंगे तो रेल की कनेक्टिविटी, वायु की कनेक्टिविटी, रोड़ की कनेक्टिविटी बढ़ी या आप देखेंगे कि जल मार्ग के ऊपर जिस तरह से इलाहाबाद से लेकर हल्दिया तक गंगा में ट्रांसपोर्ट चलाने की बात हो रही है। इसके कारण क्या है कि जब लोगों में आवागमन की सुविधा बढ़ती है तो टूरिज्म के बारे में उनकी सोच या उनके घूमने का विचार, अपने परिवार को ले जाने का विचार बदलता है?

“शिक्षा ने भी बढ़ाया है परिभ्रमण का हौसला,

इससे भी बढ़ता जा रहा है टूरिज्म का सिलसिला

देश और विदेश में कई अनोखे स्थान हैं,

जहां जाने देखने का मन में आता ध्यान है।

ऐसे स्थल धार्मिक हैं या प्राकृतिक या कलात्मक

और कई हैं ऐतिहासिक और सृजनात्मक

पर्यटन सुविधाओं के भी हैं वहां साधन,

कई और होती जा रही हैं आए दिन सुविधाएं नई।

कान्हा, रणथम्भौर, कार्बेट, एलोरा और अजंता बुलाते हैं

मौन सबको मिलने नालंदा गया विक्रमशिला।

अभय वन में शेर, चिता, बाइसन, गैंड, सूअर

सहज दिखते घूमते-फिरते निडर बेफिक्र।

पर्वतों में हिमालय, सतपुड़ा, विंध्य, अरावली

शत्रुओं के मन में जिनको देख मचती है खलबली।”

आप यह समझें कि मैं यह बिल लेकर क्यों आया हूं? सबसे पहला सवाल यह है कि बिल लाने की आवश्यकता क्या है? इसके ऑब्जेक्ट्स और रीज़न क्या हैं? हमारे यहां लगभग 20 मिलियन से ज्यादा टूरिस्ट देश और विदेश से आते हैं। भारत की जीडीपी में लगभग सात प्रतिशत टूरिज्म का योगदान है। अभी अनुराग जी बजट भाषण में जीडीपी ग्रोथ की बात कर रहे थे और बता रहे थे कि भारत किस तरह से विकसित हो रहा है। जमाना अब बदला है। जमाना ऐसे बदला है कि पहले के जमाने में माइंस और मिनरल्स किसके पास हैं, किसके यहां ओद्योगिक क्रांति हो रही है, यह देखा जाता था। लेकिन उसमें परिवर्तन आया है और वह ऐसे आया है कि वह कंट्री आगे गई जिसने अपने को टूरिज्म के क्षेत्र में बहुत ज्यादा विकसित करने के बारे में सोचा है। मैं झारखण्ड राज्य से आता हूं और इस देश का 40 परसेंट से ज्यादा माइंस और मिनरल्स मेरे राज्य के पास है। चाहे वह कोयला हो, बाक्साइट या माइका हो। इस देश की रेलवे को 40 परसेंट से ज्यादा रेवेन्यू केवल झारखण्ड राज्य से प्राप्त होता है। लेकिन आप यदि जीडीपी की दृष्टि से देखें, रोजगार, स्वास्थ्य और विस्थापन-पलायन की दृष्टि से देखेंगे तो आपको मेरा राज्य अंतिम पायदान पर नजर आएगा। उसका कारण यह है कि हमने अपने टूरिस्ट इंफ्रास्ट्रक्चर पर जितना ध्यान देना था, उतना नहीं दिया है या केन्द्र सरकार की तरफ से जितना ध्यान देना चाहिए था उतना ध्यान नहीं दिया गया। दुनिया के देशों में कौन से देश आगे बढ़ रहे हैं? सिंगापुर की इकोनॉमी आपको बढ़ती नजर आएगी। शहरों में लंदन और पैरिस की इकोनॉमी बढ़ती नजर आएगी। स्विट्ज़रलैंड जैसे देश पर-कैपिटा इंकम में बहुत बढ़े हुए दिखाई देंगे। सिंगापुर में कुछ नहीं है, स्विट्ज़रलैंड में कुछ नहीं है, लंदन और पैरिस में भी कुछ नहीं है। वहां क्या है? वहां टूरिज्म है। पर्यटक आते हैं, पैसा खर्च करते हैं, जिससे इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलप होता है। उसके आधार पर ये कंट्रीज़ आगे बढ़ती जा रही हैं। यही कारण है कि भारत सरकार को टूरिज्म के ऊपर सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए। अनुराग सिंह ठाकुर जी यहां बैठे हुए हैं। हिमाचल और उत्तरांचल के लिए कहा जाता है कि ये देवभूमि हैं। हिमाचल में दो-तीन जगह जाने का मुझे मौका मिला। मैं धर्मशाला गया हूं और वहां एक बहुत खूबसूरत स्टेडियम अनुराग जी ने बनवाया है। मैं देश के सभी लोगों से जो मेरी आवाज को सुन रहे हैं उन्हें मैं कहना चाहूंगा कि कहीं जाएं या नहीं जाएं लेकिन अनुराग सिंह ठाकुर जी का बनाया हुआ जो स्टेडियम है उसको देखने अवश्य जाएं। आप देखेंगे कि यह स्टेडियम दुनिया के बेहतरीन स्टेडियम्स में से एक है।

लेकिन आप यह समझिए कि अनुराग सिंह ठाकुर जी ने उस स्टेडियम को बनाया, जब स्टेडियम बना था, तब वहां कुछ नहीं था। उस धर्मशाला में रहने के लिए एक भी बढ़िया होटल नहीं था। उसी स्टेडियम के कारण इन्होंने एक इंफ्रास्ट्रक्चर क्रिएट किया, जिसके कारण वह हाइ-एंड टूरिस्ट स्पॉट बन गया, जबकि धर्मशाला वहां है, जहां पर दलाई लामा जी के आने बाद पूरी की पूरी दुनिया का उसके ऊपर कान्सन्ट्रेशन है। वहां एक एयरपोर्ट नहीं

था, इनके प्रयास से एक एयरपोर्ट किसी तरह से चालू हुआ। वह भी कभी चालू होता है और कभी बंद हो जाता है। कुछ फ्लाइट्स जाती हैं और कुछ फ्लाइट्स नहीं जाती हैं। इस कारण से आप देखिए कि उस तरफ चाहे ज्वालादेवी हो, चाहे बज्रेश्वरी देवी हो, चाहे चिंतपुरी हो, जहां की शक्तिपीठों में लोग जाने की स्थिति में होते हैं, लोग दलाई लामा के आश्रम में जाना चाहते हैं, उस जगह इन्फ्रास्ट्रक्चर का कोई डेवलपमेंट नहीं है।

सभापति महोदय, मैं अपने इलाके की बात करता हूं। मैं जिस इलाके से आता हूं, वह कल्चरली सबसे पिछड़ा हुआ इलाका है। मेरा जो इलाका है, जहां से मैं सांसद हूं, जहां मैं पैदा हुआ था, वह अंग प्रदेश कहलाता है। अंग प्रदेश राजा कर्ण की राजधानी थी। आज आप समझिए कि यदि मैं यहां पर पर्यटन मंत्री जी से सवाल पूछूंगा या उनके अधिकारियों से पूछूंगा कि यदि वह राजा कर्ण की राजधानी थी, तो उसके कुछ अवशेष होंगे। वह अवशेष किसी प्राइवेट आदमी के हाथ में चले गए हैं। टूरिज्म मंत्री साहब, क्योंकि कल्चर मंत्रालय आपका नहीं है, लेकिन किसी जमाने में यह बार-बार हमेशा हुआ कि टूरिज्म और कल्चर को एक ही विभाग माना गया था, डिपार्टमेंट भले ही अलग-अलग थे। आप समझिए कि वह राजा कर्ण की राजधानी थी, वहां कर्णगढ़ी है, मुंगेर में- भागलपुर में, निगलेक्टेड है, कोई देखने वाला नहीं है। हम हमेशा कहते हैं कि इस पार्लियामेंट में जितने भी भाषण होते हैं, वर्ष 1952 से लेकर वर्ष 2019 तक, वे सभी कहते हैं कि भारत की जो सभ्यता है, भारत की जो संस्कृति है, वह हजारों-लाखों साल पुरानी है। हिन्दू धर्म से, हिन्दू कल्चर से पुरानी कोई भी सभ्यता नहीं है। अभी कुंभ की बहुत चर्चा हो रही है। कल माननीय प्रधान मंत्री जी कुंभ की चर्चा कर रहे थे। कुंभ का बहुत बढ़िया आयोजन केन्द्र सरकार और राज्य सरकार ने, माननीय मोदी जी और माननीय योगी जी ने मिलकर कुंभ की एक बहुत अच्छी व्यवस्था की है। यह धार्मिक टूरिज्म के तौर पर है। लेकिन मैं आपको बताना चाहूंगा कि कुंभ कहां पर होता है? कुंभ वहां होता है, जब समुद्र मंथन के बाद राक्षस अमृत लेकर भाग रहे थे, तब जहां-जहां पर अमृत गिरा था, वहां-वहां कुंभ होता है। चाहे वह इलाहाबाद में हो, चाहे उज्जैन में हो, चाहे नासिक में हो और चाहे हरिद्वार में हो। लेकिन आपको आश्चर्य होगा कि जिससे समुद्र मंथन हुआ, जहां समुद्र मथा गया, वह मंदार पहाड़ मेरे इलाके में है, मेरे जिले में है। मंदार पहाड़ मेरे इलाके में है। यदि आप बैंकॉक के एयरपोर्ट पर जाएंगे, तो आपको पूरा का पूरा मंदार पहाड़ दिखाई देगा। बैंकॉक का एयरपोर्ट, जो भारत का अंग नहीं है, जहां का धर्म हिन्दू नहीं है। उस बैंकॉक के एयरपोर्ट पर आपको पूरा मंदार पहाड़ दिखाई देगा। एक तरफ देव हैं, एक तरफ दानव हैं। लेकिन मैं इस हिन्दुस्तान में बच्चों को ही पूछूंगा कि जहां समुद्र मंथन हुआ था, वह मंदार पहाड़ जानते हो, तो शायद ज्यादातर लोग नहीं बता पाएंगे। वहां पर कुछ नहीं है, कोई इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं है। अभी वहां पर थोड़ा-बहुत स्वदेश दर्शन के नाम पर रोप-वे कैसे बनेगा, उसके लिए भारत सरकार ने माननीय मोदी जी के आने के बाद थोड़ा पैसा दिया है। लेकिन यदि उसको साइंस, क्योंकि कई एक लोग हमारे धर्म को, जैसे वी. के. सिंह साहब कहते हैं कि यह मैथिलॉजी है, इसका क्या लेना-देना है। उसी मंदार के इलाके में साहिबगंज जो कि झारखंड का पार्ट है, राजमहल

का फ़ॉसिल्स है, वह 19 करोड़, 20 करोड़ वर्ष पुराना है, साइंस कहता है। बीरबल साहनी जो सबसे बड़े वैज्ञानिक हुए, जिनके नाम पर लखनऊ में इतना बड़ा इंस्टीट्यूट है।

लेकिन वह फ़ॉसिल्स प्रिजर्व होगा, उसको टूरिज्म के तौर पर डेवलप करिए। मैं पिछले दस सालों से थक गया, मैं कुछ नहीं कर पाया। मैं टूरिज्म मिनिस्टर, साइंस एंड टेक्नोलोजी मिनिस्टर, एच.आर.डी. मिनिस्टर से स्टेट से सेंटर से जितनी लिखत-पढ़त कर सकता था, इस पार्लियामेंट का जितना उपयोग कर सकता था, मैंने किया, परंतु कुछ नहीं हुआ और मैं थक गया।

परंतु यदि आप कनाडा जाएंगे, वहां केलिगरी एक जगह है, यदि वहां जाएंगे तो वहां आपको पांच लाख, छः लाख करोड़ साल पुराना एक फ़ॉसिल दिखाई देगा। उसके लिए उन्होंने एक बड़ा म्यूजियम बना रखा है और दुनिया भर के टूरिस्ट वहां जाते हैं। यदि आप साइंस को देखेंगे तो 19 करोड़ या 20 करोड़ वर्ष पुराना फ़ॉसिल राजमहल की पहाड़ियों में हैं और यदि आप समुद्र मंथन को देखेंगे तो आपको लगेगा कि किसी जमाने में वहां समुद्र था और वहां सचमुच का समुद्र मंथन हुआ। इसीलिए हिंदू धर्म को जो माइथोलोजी के तौर पर मानते हैं, उनके लिए भी एक बड़ी सीख दे सकते हैं कि यहीं मंदार पहाड़ है और यहीं फ़ॉसिल है।

अब हम गंगा की बात करते हैं। गंगा की एक कहानी है कि गंगा को जब भगीरथ ने आगे लाना शुरू किया तो एक मुनि तपस्या कर रहे थे और मुनि की तपस्या भंग हो गई तो वहां उन्होंने पूरी की पूरी गंगा को पी लिया। सुलतान गंज एक जगह है, जहां उत्तर वाहिनी गंगा है। उत्तर वाहिनी गंगा हो तो गंगा में वह सर्वश्रेष्ठ जगह मानी जाती है। चाहे वह हरिद्वार की गंगा हो, चाहे वह बनारस की गंगा हो, चाहे वह सुलतान गंज की गंगा हो और चाहे वह मेरे गांव बटेश्वर स्थान की गंगा हो। वहां एक जंघीराघाट है, वहां जाह्नवी मुनि तपस्या कर रहे थे और उन्होंने वहां पूरी की पूरी गंगा को पी लिया। उसके बाद उन्होंने अपनी जांघ से गंगा निकाली। इसलिए गंगा का जो उपनाम जंघीरा है, वह वहीं से पड़ा। अब आप देखिए सुलतान गंज उत्तर वाहिनी गंगा है। वहां ऐसा होता है कि कभी गंगा शहर के किनारे आती है, कभी गंगा दूर चली जाती है। मेरे लिए सुलतान गंज एक महत्वपूर्ण जगह इसलिए है, क्योंकि उसी सुलतान गंज से, जहां से मैं सांसद हूं, वहां चार से पांच करोड़ पर्यटक आते हैं। वे लोग वहां से नंगे पांव कांवड़ लेकर आते हैं। सावन और भादों के दो महीने ऐसे होते हैं, जिसमें कम से कम एक से सवा करोड़ लोग आते हैं। वे वहां गंगा से पानी लेते हैं और 12 ज्योतिर्लिंग में एक ज्योतिर्लिंग और 51 शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ हमारे देवघर में हैं, वे वहां गंगाजल लेकर जाते हैं। वहां पूजा के समय सावन और भादों में आप टैम्पोरेरी व्यवस्था कर देते हैं। लेकिन उसके इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए क्या व्यवस्था होनी है, वहां कोई व्यवस्था नहीं है। जहां से मैं सांसद हूं, उसकी एक विधान सभा क्षेत्र से एक जमाने में माननीय दिग्विजय सिंह जी, जो यहां रेल मंत्री थे, जिनकी अब मृत्यु हो गई। लेकिन जब वह रेल मंत्री थे तो उन्होंने एक प्रयास किया कि सुलतान गंज से देवघर तक जो

पैदल जा सकते हैं, वे पैदल जाएं, लेकिन आज के समय में जो पैदल नहीं जा सकते हैं, उनके लिए वहां एक रेल लाइन बननी चाहिए। माननीय अटल जी की सरकार थी। 1998 में वह रेल लाइन पास हो गई। 1998 में सुलतान गंज से देवघर वाया असरगंज, बेलहर, कटोरिया 100 किलोमीटर की रेल लाइन पास हो गई। आज मैं 2019 में बात कर रहा हूं। 21 सालों के बाद भी उस रेल लाइन का लैंड एक्जुजिशन स्टार्ट नहीं हुआ है, बनने की बात छोड़िये। 1998 के बाद जितने बजट आ रहे हैं, अभी भी मैं देख रहा था कि अभी जो बजट आया, उसकी जो पिक बुक है, उसे मैंने देखा कि वह क्या कह रही है कि रेल लाइन बनेगी की नहीं बनेगी। मैंने देखा कि उस पिक बुक में आज भी लिखा हुआ है कि सुलतान गंज से बारास्ता असरगंज, कटोरिया, बेलहर, तारापुर होते हुए देवघर रेल लाइन बनेगी। 21 साल के बाद भी यह हालत है। वहां इतने पर्यटक आते हैं। मैं कहता हूं कि मंत्री जी मेरे यहां जितने पर्यटक आते हैं, पूरे देश भर में इतने पर्यटक कहीं नहीं जाते। वहां चार से पांच करोड़ पर्यटक आते हैं। इतने पर्यटक न तिरुपति में जाते हैं, न इतने वैष्णो देवी में जाते हैं, न इतने पर्यटक शिरडी में जाते हैं। लेकिन उस जगह का विकास नहीं है।

आप जैन धर्म को देखें, जैन धर्म के इतने अनुयायी हैं। मैं जहां से सांसद हूं, उसके बगल में पारसनाथ है। पारसनाथ में जैनियों के 24 तीर्थंकर हुए। उसमें से 22 तीर्थंकरों ने वहीं पारसनाथ में निर्वाण प्राप्त किया। आपको आश्चर्य होगा कि सन् 1947 से ले कर आज तक आजादी के 72 साल बाद, वहां पर रेल लाइन बननी चाहिए, हमारी कांस्टिट्यूएन्सी मधुपुर से गिरिडीह और गिरीडीह से पारसनाथ और पारसनाथ से मधुबन। इस रेल लाइन की मांग सन् 1972 से हो रही है। लेकिन कुछ नहीं हुआ। इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं बना, रोड नहीं बनी, रेल नहीं बनी, वहां जो पूरे देश भर के जैन अनुयायी जाएंगे, उनके लिए रहने के लिए अच्छा होटल नहीं है। वहां हैलिपैड नहीं बना। इस कारण से आप समझें कि वह पूरा का पूरा नैगलेक्टिड है। उसी से यदि अलग हट जाएंगे तो भागलपुर में एक जगह चंपापुरी है, जो कि भागवान वासु एकमात्र ऐसे गुरु हुए, जैन के तीर्थंकर हुए, जो कि भागलपुर में ही पैदा हुए और भागलपुर में ही उनकी डेथ हुई।

चंपापुरी का एक बड़ा पुराना इतिहास है। मैं उसमें जाना नहीं चाहता, लेकिन कितने लोगों को चंपापुरी के बारे में पता है। मैं कहता हूँ कि भागलपुर के भी कई लोगों को भी नहीं पता है कि यह चंपापुरी कोई जगह है। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, लगातार सभी जगह, आप जितनी बार सुनेंगे कि हमारी पुरानी सभ्यता थी, संस्कृति थी, हमारे पास तक्षशिला था, तक्षशिला में चाणक्य पैदा हो गए, नालंदा आ गए, नालंदा विश्वविद्यालय हो गया। विक्रमशिला विश्वविद्यालय हो गया, विक्रमशिला विश्वविद्यालय जब जलाया जा रहा था, सन् 1189 में यह वह साल था, जिस साल ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी बन रही थी। आज हमारे बच्चे और मैं अपने बच्चों की भी बात करता हूँ, दूसरों की मैं बात नहीं करता, मैं अपने बच्चों की भी बात करता हूँ कि यदि पढ़ाने की भी बात आती है तो हमेशा

लगता है कि हम विदेशों के विश्वविद्यालयों में अपने बच्चों को पढ़ाएं। क्यों पढ़ाएं? क्योंकि यहां इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं है। विक्रमशिला मेरा गांव है। मैं अभी दो साल पहले राष्ट्रपति महोदय को वहां ले कर गया था। वहां जाने के लिए रोड नहीं है। वह मेरा गांव है, मैं वहां पैदा हुआ हूँ। वह विक्रमशिला विश्वविद्यालय जिसने कि दलाईलामा पंथ की स्थापना की। हम दलाई लामा की बात करते हैं, हमने दलाई लामा को यहां रखा है। इस देश में नहीं दुनिया में पहला वाइस चांसलर सिस्टम विक्रमशिला विश्वविद्यालय ने दिया। भगवान अतीश दिपांकर आठवीं शताब्दी में विक्रमशिला विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर हुए। उस वक्त दुनिया में कहीं वाइस चांसलर सिस्टम नहीं था। अतीश दिपांकर को छोटा बुद्ध कहते हैं। अतीश दिपांकर दलाई लामा पंथ के गुरु हैं। लेकिन जब आप विक्रमशिला जाएंगे, तो विक्रमशिला में आपको केवल घास के अलावा और बकरी चरने के अलावा कोई भी इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं दिखाई देखा। मैं 10 साल से सांसद हूँ, बोलते-बोलते थक गया हूँ। उस विक्रमशिला विश्वविद्यालय को जिस बख्तियार खिलजी ने जलाया, आज मैं जहां सांसद हूँ, वह देवघर आया, उसका भी कोई अता-पता आपको नहीं दिखाई देगा। मेरा कहने का मतलब यह है कि इस बिल को लाने के पीछे उद्देश्य क्या था? उद्देश्य यह है कि हम केवल चर्चा करते हैं।

दिल्ली में कुतुबमीनार है, यहां आगरा है, ताजमहल आप देख लीजिए। कहीं सारनाथ चले जाएं, कहीं सोमनाथ चले जाएं। जो अमीर राज्य हैं, वे अपने लिए तो इन्फ्रास्ट्रक्चर पैदा कर लेते हैं, जैसे केरल है, जहां से मंत्री जी आते हैं, वहां एनआरआई का ठीक-ठाक पैसा आता है। मुझे केरल जाने का कई बार मौका मिला है। आपके जो गांवों के भी हालत हैं, वह शहरों से ज्यादा अच्छे हैं। जो लोगों ने मकान बना रखे हैं, वैसे मकान मैं दिल्ली, मुंबई और कोलकाता में भी नहीं देखता हूँ। मैं गांव की बात कर रहा हूँ। उसका कारण यह है कि आपका जो पॉप्युलेशन है, वह माइग्रेट हो कर बाहर चला गया, बाहर से जो वह पैसा भेजा है और इस कारण से आपके राज्य में जो पैसा आ रहा है, आप उसका डेवलपमेंट इन्फ्रास्ट्रक्चर के तौर पर कर रहे हैं। लेकिन जो राज्य गरीब हैं, जिस राज्य की सरकार ने कसम खा रखी है कि उनको टूरिज्म सबसे छोटी प्रायोरिटी रखनी है, जिसने कसम खा रखी है कि टूरिज्म का जो बजट है, वह 30, 40 या 50 करोड़ रुपये से ज्यादा नहीं होगा। जहां इतने लोग आते हैं, उसके बारे में इस देश में कोई पॉलिसी नहीं है। टूरिज्म डिपार्टमेंट में जिन ब्यूरोक्रेट्स की पोस्टिंग हो जाती है, उनको लगता है कि कोई काम नहीं मिला तो हमको टूरिज्म दे दिया। हम तो फाइनेंस मंत्रालय के हकदार थे, आर्थिक मामलों के विभाग में चले जाते, बैंकिंग में चले जाते, ऊर्जा में चले जाते।

मैं मंत्री जी की बात नहीं करता कि जिनको भी यूथ, स्पोर्ट्स, टूरिज्म, कल्चर ये सब विभाग मिल जाते हैं तो उनकी छवि पूरे देश भर में कार्यकर्ताओं के सामने भी होती है कि कोई काम नहीं मिला, इनको मंत्री बनाना था तो कोटा में इनको मंत्री बना दिया। इस कारण से आज तक कभी भी कोई अच्छी पॉलिसी इस देश में डेवलप नहीं हो

पाई। यही कारण है कि आप समझें कि हमने क्या प्रपोजल दिया, हमारा बिल क्या कहता है? हमने क्लॉज 3(1) में कहा-

“The Central Government shall, by notification in the Official Gazette, establish a Corporation to be known as the Tourism Promotion Corporation of India with its Headquarters at Delhi.”

टूरिज्म प्रमोशन जो है, वह एक कॉरपोरेशन होना चाहिए। उसका दिन-रात का एक काम होना चाहिए। इसके पीछे रीजन यह है कि हम जब भी 10 साल में आपके पास किसी योजना के लिए गए, मैं यह नहीं कहता कि भारत सरकार ने पैसा नहीं दिया। भारत सरकार के पास जितना पैसा था, उससे ज़्यादा पैसा जो हमको मिलना चाहिए था, उससे ज़्यादा पैसा मैंने लिया है और आपने दिया है। जैसे अभी ही ‘प्रसाद योजना’ में देवघर को आप लोगों ने 39 करोड़ 13 लाख रुपया दिया है। प्रसाद योजना में देवघर को इन्क्लूड किया है। उसके पहले एक डेस्टिनेशन के सेंटर के नाते आप देते थे, उसमें भी देवघर को आपने क्यू कॉम्प्लैक्स के लिए 25 करोड़ रुपया दिया है। ऐसा नहीं है कि देवघर को पैसा नहीं मिला है, लेकिन देवघर का क्या होगा? आपको पता है कि वह क्यू कॉम्प्लैक्स के लिए जो आपने पैसा दिया, वह क्यू कॉम्प्लैक्स का पैसा 2011-12 में दिया। आपकी केवल जानकारी के लिए दे रहा हूँ कि राज्यों में क्या हो रहा है और आप उसको कैसे फॉलो कर रहे हो। संयोग से 2015 तक उसका काम चालू नहीं हो पाया, जबकि 2013 में माननीय तत्कालीन राष्ट्रपति महोदय प्रणब मुखर्जी साहब ने उसका शिलान्यास कर दिया। उसके बाद भी काम चालू नहीं हुआ। 2015 में मेरे यहाँ, चूँकि इतने लोग आते हैं, मैंने कहा कि 4-5 करोड़ लोग आते हैं तो संयोग ऐसा खराब हुआ कि हमारे यहाँ भगदड़ मच गई और लगभग 9-10 कांवड़ियों की भगदड़ में डेथ हो गई। मुझे पहली बार लगा कि मेरी पहली प्रायर्टी जो है, अपने क्षेत्र के लोगों के लिए है। मैंने इस पार्टी का सांसद, अपनी सरकार रहते हुए और माननीय मोदी जी कितना काम कर रहे हैं, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। उनका पूरा का पूरा कॉन्सन्ट्रेशन आम, गरीब, पिछड़े, दलित, वंचित, शोषित या इस तरह के पिछड़े इलाकों के लिए ही हैं। मैंने इस लोक सभा में एडजर्नमेंट मोशन दे दिया और हंगामा हुआ। माननीय राजनाथ जी ने मुझे बुलाया। स्वाभाविक है कि मैं पार्टी का सांसद था और बुलाया कि आपने क्यों एडजर्नमेंट मोशन दिया। पहली बार ऐसा हुआ कि एक सरकारी पार्टी के सांसद ने कार्य स्थगन प्रस्ताव दे दिया। सर, मैंने कहा कि मेरी पीड़ा यह है कि 2011-12 में पैसा गया। वहाँ जो कांवड़िये आते हैं, उनको रखने के लिए, रुकवाने के लिए वे 105 किलोमीटर पैदल नंगे पाँव चलकर आते हैं। हमारे पास कोई ऐसा इंफ्रास्ट्रक्चर नहीं है और 105 किलोमीटर के बाद नंगे पाँव ऐसी स्थिति में होते हैं, कई एक बुजुर्ग खासकर महिलाएँ, बच्चे जो चल पाने की स्थिति में नहीं होते हैं

। उनके पाँव में फोड़ा होता है और उनको फिर हम 25 किलोमीटर अपने पूरे जिले में घुमाते रहते हैं क्योंकि इतनी लम्बी लाइन को कंट्रोल करना, खास कर सोमवार के दिन 10-12 लाख लोग होते हैं। मंदिर जाने का एक छोटा सा गेट है। ढाई फीट का एक गेट है। एक ही गेट है, एक ही गेट से आना है तो हम सब को पूजा नहीं करा सकते हैं। उनको हमें 25 किलोमीटर घुमाना पड़ता है। इस कारण से यह क्यू कॉम्प्लैक्स सैक्शनड है। 2013 में इसका राष्ट्रपति महोदय ने शिलान्यास कर दिया लेकिन उसका काम चालू नहीं हो रहा है। आप यह समझिये कि इतनी बुरी दुर्घटना के बाद माननीय प्रधान मंत्री जी ने किसी तरह से संज्ञान लिया। माननीय गृह मंत्री जी ने एक आश्वासन दिया। लोक सभा के अंदर मुझे उठाने का मौका दिया और कहा कि इसका काम चालू होगा। काम चालू हो गया। वह टोटल 126 करोड़ का प्रोजेक्ट है। वह आधा-अधूरा है। उसका कोई यूज नहीं है। किसी तरह से पिछली बार उसको हम लोगों ने कितनी बार जाकर देखा। मैं केवल यह कह रहा हूँ कि इसको बनाने के पीछे मेरी मंशा क्या है? क्या-क्या मैंने डाला है और यह मेरा टूरिज्म के क्षेत्र में अपना व्यक्तिगत प्रेक्टिकल एक्सपीरियंस है। इसलिए मैं यह बात बता रहा हूँ, क्योंकि मैं जिस क्षेत्र से आता हूँ, सांस्कृतिक तौर पर, ऐतिहासिक तौर पर उससे ज़्यादा समृद्ध शायद कम ही जगह होगी।

इसी कारण से मैंने यह कहा कि यदि यह होगा, कोई एक डायरेक्टर जनरल होगा, जो यह देखेगा कि प्रमोशन कैसे होगा, टूरिज्म कैसे बढ़ेगा, यदि वह हैडक्वार्टर से उसे देखेगा तो देवघर के क्यू कॉम्पलेक्स के जैसी स्थिति नहीं होगी। अभी आपने प्रसाद का पैसा दिया, मैं आपको बताता हूँ कि प्रसाद काफी दिनों तक पड़ा रहा। उसमें मैंने कई एक ऐसे कम्पोनेंट देखे हैं, उस कम्पोनेंट की प्रसाद में आवश्यकता नहीं है। अब तो सैक्शन हो गया। जो पुरानी सचिव रश्मि वर्मा जी थीं, मैं उनसे मिलकर यह लगातार कहता रहा। आज एक शिवगंगा है, मैं आपको बताऊँ कि एक शिवगंगा है, जिसके बारे में यह कहा जाता है कि जब भगवान वहाँ जबरदस्ती बैठ ही गए, उन्होंने कहा था कि मुझे जहाँ बिठा दोगे, वहीं बैठूँगा और मैं यहाँ से बाहर नहीं निकलूँगा, यदि एक बार आपने रख दिया, तो गुरु-से में रावण ने अपने मुष्टिका प्रहार से एक गंगा बना दी, जिसे शिवगंगा कहा जाता है। मैं आपको बताता हूँ कि उसकी सफाई के लिए हमने पैसा दिया है। मैं केवल आप लोगों को जानकारी दे दूँ कि उसके लिए 10 करोड़ रुपया दिया गया। 5 करोड़ रुपया भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर ने दिया, 5 करोड़ रुपया राज्य सरकार ने दिया और कुल 10 करोड़ रुपये से शिवगंगा सफाई का अभी प्रोजेक्ट एक साल पहले हमने चालू किया है। आप जाकर देखेंगे कि शिवगंगा आज भी साफ नहीं हुई है। जब 10 करोड़ रुपये से शिवगंगा साफ नहीं हो पायी, उसमें यदि आप फिर करोड़, 2 करोड़, 3 करोड़ रुपया दे देंगे, तो पैसा बर्बाद करने के अलावा क्या करोगे, कमीशनखोरी के अलावा क्या काम करोगे? यह देखने का सवाल है, यह समझने का सवाल है, केवल यह नहीं कि राज्य सरकार ने दिया और हमको किसी तरह से पास कर देना है और हमने पास कर दिया। उसकी गलियाँ छोटी-छोटी हैं। जैसे बनारस में माननीय प्रधान मंत्री जी के आने के बाद एक डेवलपमेंट हुआ है।

जब मैं बनारस जाता हूँ, तो मैं देखता हूँ कि आसपास के जितने इलाके हैं, उन्हें टेक ओवर किया गया है और अब वहाँ से गंगा दिखाई देती है। एक समय ऐसा आया कि चारों तरफ मन्दिर कॉम्पलेक्स इतना भव्य हो जाएगा, जिससे हम उसमें अच्छी तरह से पूजा कर सकें, पूजा करवा पायें। ठीक उसी तरह की सिचुएशन देवघर की है। हम बार-बार कहते थे कि ये गलियाँ कैसे चौड़ी होंगी, गलियाँ साफ-सुथरी कैसे होंगी, गलियों का रास्ता कैसे होगा, एक ही तरह का फसाड़ कैसे होगा? जैसे अमृतसर में माननीय सुखबीर सिंह बादल जी ने अपनी एक योजना के तहत अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के डेवलपमेंट के बारे में सोचा था। मैंने कहा कि उसी तरह का डेवलपमेंट होना चाहिए। जैसे मैंने आपको कहा कि अनुराग सिंह ठाकुर जी ने इस बारे में सोचा, तो आप धर्मशाला जाकर देखिए कि वहाँ कैसा इंफ्रास्ट्रक्चर है। यह प्राइवेट इनिशिएटिव है। इस प्राइवेट इनिशिएटिव के लिए जो टूरिज्म मंत्रालय का जो एक जोर चाहिए, टैक्स कंसेशन चाहिए, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के लिए जो चीजें चाहिए, उसके लिए कुछ होना चाहिए। उसके बाद हमने कहा, यह क्लॉज 3 का पार्ट 2 है, *the corporation shall have its office in the capital city of each State and Union Territory*. जिस तरह से वी.के.सिंह साहब, आपके यहाँ एम्बेसी है। सभी देशों में आपने एम्बेसी बना रखी हैं। भारत सरकार की जो नीतियाँ हैं, नीति है या मान लीजिए, हमें किसी के साथ बिजनेस करना है, टूरिज्म डेवलपमेंट करना है, इसके लिए अलग-अलग विभाग हैं और अलग-अलग चीजें आपके हिसाब से गाइडेड हैं। भारत सरकार का विदेश मंत्रालय जो चाहता है, उसकी एम्बेसी उसी तरह से काम करती रहती है। हमने इसीलिए कहा कि इसका जो ऑफिस है, केवल यह नहीं होगा, सब जगह ऑफिस होगा और यदि सब जगह ऑफिस होगा, तो उसकी कनेक्टिविटी होगी। हमारा देश बहुत बड़ा है, अटक से लेकर कटक तक, एक जमाने में काबुल से लेकर कंधार तक हुआ करता था, अब वह छोटा-छोटा हो गया, तो आज हम कह सकते हैं कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सभी जगह के इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले अलग-अलग हैं। यदि स्विट्जरलैंड की बात करें, तो स्विट्जरलैंड से ज्यादा बढ़िया सिचुएशन हमारे यहाँ है। मैं श्रीनगर की बात करता हूँ। वर्ष 1998-99 के बाद कोई ऐसा साल नहीं है कि मैं और मेरा पूरा परिवार कश्मीर नहीं गया है, दो बार-तीन बार कश्मीर नहीं गया है। कश्मीर को जितना मैं जानता हूँ, शायद इस लोक सभा में बहुत कम ऐसे लोग होंगे, जो कश्मीर को उतना जानते होंगे, जितना कश्मीर के परिवारों को मैं जानता हूँ।

आप देखें कि यदि कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड तीनों पहाड़ी राज्यों, जिसमें एक वैली भी है और पहाड़ी भी है, यदि पहाड़ी राज्यों का मिलकर एक अलग इंफ्रास्ट्रक्चर आप डेवलप करते हैं, तो यह कितना बड़ा होगा। इसके बाद लोग स्विट्जरलैंड क्यों जाएंगे? मैं वर्ष 2009 की बात कर रहा हूँ। उस समय स्विट्जरलैंड की पॉपुलेशन केवल एक करोड़ थी। एक करोड़, सवा करोड़ वहाँ की पॉपुलेशन है। भारत का वहाँ 1.5 करोड़ टूरिस्ट जाता है। यदि आप उसे देखेंगे, उसकी वैली में यदि आप जाएंगे, Jungfrau और रेल में जाएंगे, तो वहाँ यश चोपड़ा

के सिनेमा का एक बड़ा असर दिखाई देगा। यदि आप वहाँ उतरेंगे, तो आपको वहाँ मसाला टी दिखाई देगी। वहाँ लोग मसाला टी पिलाते हैं कि यह भारत की मसाला टी है। हम अपने बारे में कितना डेवलप करते हैं?

गुस्तावा और जो कश्मीरी व्यंजन हैं, उसको डेवलप करने के लिए हमने बिहार में क्या इनिशिएटिव लिया है, झारखण्ड में क्या इनिशिएटिव लिया है? वह तो छोड़िए, हमने हिमाचल प्रदेश में क्या इनिशिएटिव लिया, पंजाब में क्या इनिशिएटिव लिया?

सभापति महोदय, अभी मैं कुछ दिनों पहले आपके राज्य में था। मैं इतनी बार चेन्नई गया, पर मुझे खुद ही उसके बारे में पता नहीं था। मैं कम से कम 100 बार से ज्यादा चेन्नई हो आया हूँ। चेन्नई जाने का मतलब होता था कि मैं तिरुपति चला जाता था, जो कि आंध्र प्रदेश में है। इस बार किसी ने मुझे कहा कि अगर आपको देखना है तो चेन्नई में एक कपिलेश्वर मन्दिर है, आप उसे देखें। उस दिन अवार्ड लेने के लिए अनुराग जी, सुप्रिया जी, हम सभी वहाँ गए थे और हम कपिलेश्वर मन्दिर चले गए। वह बहुत ही भव्य मन्दिर है, जबर्दस्त है। चेन्नई के बीचोंबीच इतना बढ़िया मन्दिर है। मैं केवल यह कह रहा हूँ कि अगर आप किसी शहर में जाते हैं, इतनी बार जाते हैं और आपको ही उसके बारे में जानकारी नहीं है। तमिलनाडु के जो मन्दिर हैं, जैसे तंजावुर का मन्दिर है, चिदम्बरम का मन्दिर है, यदि उधर से पुदुच्चेरी के रास्ते चले जाएं तो आप देखेंगे कि इस तरह का मन्दिर शायद कम लोगों ने देखा होगा। जैसे रामेश्वरम् में मन्दिर है, लेकिन वहाँ कितने लोग जा पाते हैं? कितने लोगों को हम वहाँ रोड की कनेक्टिविटी दे पा रहे हैं? कितने लोगों को हम यह बता पा रहे हैं कि यह इतने वर्षों का है, वहाँ ये चीजें हैं, इसके बारे में इतना पता है? मेरे कहने का मतलब यह है कि जब इसका कोई ऑफिस होगा तो एक-दूसरे के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान होगा। एक-दूसरे की जगहों के बारे में जानकारी होगी कि एक-दूसरे के यहाँ क्या हो रहा है? जैसे आज कौन-सा त्यौहार तमिलनाडु में मनाया जा रहा है, तमिलनाडु के मन्दिरों में मनाया जा रहा है, कौन-सा त्यौहार केरल में मनाया जा रहा है। यदि आपके यहाँ नौका दौड़ हो रही है तो उसका समय क्या है? आप यहाँ से कैसे जा सकते हैं? अगर आप वहाँ जाएंगे तो वहाँ गरीब वर्ग के लोगों के रुकने की क्या व्यवस्था है? मध्यम वर्ग के लोगों के रुकने के लिए क्या व्यवस्था है? अमीर लोगों के रुकने के लिए वहाँ क्या व्यवस्था है? इन सारी व्यवस्थाओं के बारे में हम उन्हें बता पाएंगे। इस कारण से हम चाहते हैं कि इसका एक ऑफिस खुले।

इसके क्लॉज-4 में हम कह रहे हैं: - 'The Corporation shall be headed by a Director General, to be appointed by the Central Government, in such a manner as may be prescribed.'

भारत सरकार जैसा चाहती है, वैसा करे। अगर वह किसी कमेटी या सिलेक्शन कमेटी के तहत करना चाहती है, जिसका टूरिज्म में इंटेरेस्ट हो। मैं आई.ए.एस. सर्विस का बहुत बड़ा पक्षधर भी हूं। ऑल इंडिया सर्विस एक ऐसा सर्विस है, जो इस देश को यूनाइटेड बनाए हुए है। हमें जो इच्छा होती है, हम उसके अनुसार किसी को ज्वाइंट सेक्रेटरी बना देंगे, सेक्रेटरी बना देंगे। मेरा आग्रह केवल यह है कि जिसका टूरिज्म में इंटेरेस्ट हो, उसे बनाएं। जैसे यह पार्टी का मामला होता है कि किसे क्या विभाग दिया जाए, पर एक दिन हम और अनुराग जी बात कर रहे थे तो हमने कहा कि अनुराग जी, अगर कभी भी जिन्दगी में, दस साल, बीस साल, पचास साल बाद यदि हम दोनों में लड़ाई की संभावना आएगी तो वह इसलिए आएगी कि दो मंत्रालय ऐसे हैं, जिन्हें मैं भी लेना चाहूंगा और आप भी लेना चाहेंगे - यूथ और स्पोर्ट्स मंत्रालय। यह मेरा भी विषय है कि मैं यूथ और स्पोर्ट्स विभाग में काम करना चाहता हूं और अनुराग जी का भी यही विषय है। दूसरा टूरिज्म और कल्चर विभाग है। मैं आपको बताऊं कि कभी जिन्दगी में अगर मुझसे कोई यह पूछे कि तुम्हारे इंटेरेस्ट का विषय कौन-सा है तो हमारा तो यही विषय है और मैं जितना अनुराग जी को जानता हूं, अनुराग जी का भी यही विषय है। इसलिए जिसे भी आप इसका डायरेक्टर जनरल बनाएं, उसे टूरिज्म और कल्चर के बारे में जानकारी होनी चाहिए, उसे देश के बारे में जानकारी होनी चाहिए। अगर उसे यह पता होगा तो निश्चित तौर पर वह इसमें काम कर पाएगा।

फिर ऐसा मामला है कि उसे कितनी सैलरी देंगे इत्यादि। इसके लिए क्लॉज़-5 में लिखा है: - 'The Corporation shall have a fund with an initial corpus of Rs. 5000 crore.'

हम यह चाहते हैं कि कॉरपोरेशन के पास कम से कम पाँच हजार करोड़ रुपये का कॉर्पस फण्ड हो। माननीय मंत्री जी, आपकी जितनी भी योजनाएं चल रही हैं, चाहे वह 'स्वदेश दर्शन' हो, 'प्रसाद' हो, रामायण सर्किट हो, कृष्ण सर्किट हो, बुद्ध सर्किट हो, जिसके माध्यम से भी आप काम कर रहे हैं, आपके पास फण्ड्स की हमेशा कमी होती है। मैं चाहता हूं कि इसमें मनरेगा की तरह फण्ड हो, डिमांड-ड्रिवेन फण्ड हो। पाँच हजार करोड़ रुपये में से पाँच हजार करोड़ रुपये इस कॉरपोरेशन में हमेशा मौजूद हो। जब इच्छा हो, तब इसका उपयोग करें, क्योंकि ऐसे आप काम कर ही नहीं सकते हैं, क्योंकि यह बन्दरबांट है। आपको मेरा चेहरा पसन्द आया, आपने मुझे दे दिया। आपको अंजू बाला जी का चेहरा पसन्द आया, उन्हें दे दिया। अगर पाटसाणी जी को पुरी के लिए पैसा चाहिए, उसे दे दिया। ऐसा न हो। आपको यह देखना होगा कि पूरे देश भर में हम किस तरह के इंफ्रास्ट्रक्चर को कैसे डेवलप कर सकते हैं।

जैसा मैंने आपको बताया कि चार से पांच करोड़ लोग मेरे इलाके में आते हैं। इसलिए आपको देखना होगा कि जो चार से पांच करोड़ लोग आते हैं, वे केवल मंदिर में आते हैं। इसके अलावा, वहां आसपास की जो जगह हैं - जैसे गुरु वशिष्ठ ने वहां तपोवन आश्रम बनाया था। विक्रमशिला कहां है, तारापीठ कहां है, मंदार कहां है,

बासुकीनाथ कहां है, त्रिकूट कहां है? रावण का प्लेन वहां लैंड करता था। इन सब जगहों पर यदि आप उस टूरिस्ट को ले जाना चाहते हैं, टूरिस्ट को रूकवाना चाहते हैं, तो आपको वहां रोड बनवानी पड़ेगी। यदि मान लीजिए कि रोड ट्रांसपोर्ट मंत्रालय ने आपको एक हाइवे बनाकर दे दिया, लेकिन सभी जगह हाइवे तो जाएगा नहीं। मान लीजिए कहीं से नेशनल हाइवे क्रॉस कर रही है, दो-तीन किलोमीटर ऐसा है जहां आपको उस बॉटल नेक को पूरा करना है। आप उसे किसके लिए छोड़िएगा? क्या राज्य सरकार के पास छोड़िएगा? राज्य सरकार की प्रायोरिटी है कि नहीं है, क्योंकि ये सब ऐसी जगह पर हैं, जिससे वोट की राजनीति नहीं होती है।

वहां किसी का मॉन्यूमेन्ट था, इससे क्या फर्क पड़ता है? जैसे मान लीजिए कि हमारा जो देवघर है, इसीलिए मैं प्रैक्टिकल बात कह रहा हूं। जब भी कोई योजना बनती है, जैसे वहां पानी की बहुत कमी है। जब हमने उसके लिए योजना बनायी और वह योजना मेरे पास आयी, तो उसने कहा कि वहां डेढ़ या पौने दो लाख की आबादी है। हमको आगे 20-25 साल के लिए टारगेट करना है। 20-25 साल के टारगेट पर वहां की आबादी हाडली साढ़े चार या पांच लाख होगी। वहां पांच लाख की आबादी कैसे 25 साल तक पानी पीएंगी? उसी हिसाब से उसने पानी की योजना बना दी और डीपीआर भी बन गया। वे कभी यह नहीं सोचते हैं, क्योंकि वोट की राजनीति नहीं होती है और कभी किसी के दिमाग में नहीं आता है कि वहां रोज लाख-डेढ़ लाख लोग पूजा करने के लिए आते हैं। उनको भी पानी देना है। उस तरह के इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेन्ट के लिए यदि आप राज्य को इन्सिस्ट करके काम नहीं कर सकते हैं, तो आपको देना पड़ेगा।

दूसरा, आप यह समझे कि जो यह फंड है, सबसे ज्यादा जरूरी है कि आपके पास 'मनरेगा' की तरह पांच हजार करोड़ रुपये का कॉर्प्स फंड होना चाहिए। इसके बाद कॉरपोरेशन क्या काम करेगा, इस बारे में हमने क्लॉज-6 में कहा है कि "the Corporation shall formulate a Tourism Policy in consultation with the State Government" जिसके बारे में मैंने कहा कि सभी जगह आपके ऑफिस होंगे तो उससे आपको जानकारी मिलेगी, जैसे बजट के लिए होता है। माननीय प्रधानमंत्री जी हो या राज्य सरकारें हों, हमेशा कन्सल्ट करते रहते हैं कि कौन-सा बजट होगा, कहां तथा किस इलाके में जाएगा। उस हिसाब से स्टेट का कन्सल्टेशन और स्टेट की प्रायोरिटी होनी चाहिए। स्टेट की प्रायोरिटी ऐसी नहीं होनी चाहिए, बल्कि आपको भी अपने ऑफिस के माध्यम से एक पूरा का पूरा रिपोर्ट बना देना चाहिए। आपके यहां क्या समस्या है? जैसा मैं अभी देख रहा था और मैं फिक्की की एक रिपोर्ट लेकर आया हूं। होता क्या है कि दिल्ली में बैठकर फिक्की, सीआईआई, एसोचेम तथा इस तरह की अन्य संस्थाएँ आपको रिपोर्ट देती रहती हैं और आप गुमराह होते रहते हैं। मैं लोक सभा में ऑन रिकॉर्ड यह बात कहता हूं। ये जितनी भी संस्थाएँ हैं, मेरा उनसे कोई विरोध नहीं है। वे अच्छे बिजनेसमैन हैं। बिजनेसमैन हैं तो स्वाभाविक है कि दो पैसे कमाएंगे। यदि दो पैसे कमाते हैं तो लोगों को रोजगार भी देते हैं। इसका मतलब है कि

बिजनेसमैन के खिलाफ कोई माहौल नहीं होना चाहिए। लेकिन उनकी जो प्रायोरिटी है, सभापति जी, मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूँ। उनकी प्रायोरिटी आपको खुश करना है। उन्होंने सीआईआई तथा फिक्की में एक कमेटी बना दी है और आपको वे रिपोर्ट दे देते हैं। आपको लगता है कि मेरा क्या है, इन्होंने तो अच्छा ही काम किया है। लेकिन मैं इस रिपोर्ट को देख रहा था कि यह रिपोर्ट कहां का है। वे दिल्ली के बारे में बता रहे हैं। वे मुम्बई के बारे में बता रहे हैं। वे राजस्थान के बारे में बता रहे हैं। वे मध्य प्रदेश के बारे में बता रहे हैं। मैंने उनकी पूरी रिपोर्ट पढ़ ली है, लेकिन उनको बिहार दिखायी ही नहीं दिया। उनको झारखंड दिखायी ही नहीं दिया। उनको ओडिशा दिखायी ही नहीं दिया। उनको हिमाचल प्रदेश दिखायी ही नहीं दिया। आप यह समझें कि उनको वैसी जगह दिखायी ही नहीं दी। जबकि हिन्दुत्व के बाद इस देश में तीन धर्म हैं, जो कि हिन्दुत्व से ही निकले हुए हैं या हिन्दुत्व के ही कारण हैं। ये तीनों के तीनों धर्म जहां से निकले हैं, चाहे सिख धर्म की बात हो, जबकि सिख धर्म की स्थापना गुरु गोविंद सिंह जी ने की थी। उनका बर्थ प्लेस कहां है? वह बिहार है। यदि बुद्धिज्म की बात करें तो महात्मा बुद्ध का जो पूरा इतिहास तथा दर्शन है, वह पूरा का पूरा बिहार में है। यदि जैनज्म की बात करें तो पूरा का पूरा दर्शन बिहार है।

राम जी यदि पढ़ने के लिए विश्वामित्र जी के आश्रम में गए, तो वह बक्सर है, यदि वह शादी करने के लिए गए, तो जनकपुर गए। यदि जरासंध की हत्या की, तो जरासंध बिहार में ही नालंदा के आसपास के राजा थे। कर्ण की अगर बात करें, तो जैसा मैंने अभी कहा कि अंग प्रदेश के राजा था, जब कोई राजा उसको बनाने के लिए तैयार नहीं था। जहां से हिंदुत्व का, रामायण को, महाभारत का, गीता का सब कुछ आपको दिखाई देता हो, वहां इनकी प्रायोरिटी नहीं है। प्रायोरिटी इसलिए नहीं है, क्योंकि बिहार में कोई नेता नहीं है, जो इस बारे में चर्चा करेगा। कोई वित्त मंत्री, किसी दिन यदि बिहार के लोगों को मौका मिलेगा, झारखंड के लोगों को मौका मिलेगा, ओडिशा के लोगों को मौका मिलेगा, तब न सीआईआई, फिक्की, एसोचैम उसके लिए काम करेंगे। यहां तो मौका है कि बड़े राज्यों को मिलना है, दिल्ली के इर्द-गिर्द गणेश परिक्रमा करनी है, तो इस तरह इसे पूरा करना है। मैं कह रहा हूँ कि टूरिज्म पॉलिसी इस तरह से नहीं बन सकती है। टूरिज्म पॉलिसी स्टेट के साथ डिस्कशन करके आप बना सकते हैं। आप किसी के सहारे इन चीजों को नहीं छोड़ सकते हैं। आप सांसदों से पूछिए कि उनके इलाके में क्या है। हम आपको जो गाइड करेंगे, यहां जितने लोग बैठे हुए हैं, यहां वीणा जी बैठी हुई हैं, जो मैं कर्णगढ़ी की बार-बार बात करता हूँ, मुंगेर की वह सांसद हैं। वह जो कर्णगढ़ी है, वहां अभी स्वामी सत्यानंद जी का भव्य आश्रम है। वे बड़े संत हैं। उनका आश्रम हमारे यहां भी है। वे अच्छा काम करते हैं। मुंगेर योगाश्रम के तौर पर एक बड़ा आश्रम भी है, लेकिन कर्णगढ़ी तो खत्म हो गई। वहां कुछ नजर नहीं आता है। मैं आपको कह रहा हूँ कि यहां जितने सांसद बैठे हुए हैं, वे आपको बताएंगे कि कौन सी जगह हमारे यहां है, उसका क्या ऐतिहासिक महत्व है, क्या सांस्कृतिक महत्व है और उसके बाद यदि एक पॉलिसी बनती है, फार्मुलेट होती है, तो मेरा आपसे आग्रह होगा कि आप अभी इसके

शुरू करने के पहले सारे सांसदों से ही पूछ लीजिए । सबसे पहले उसे ही कंपाइल करिए कि कहां, क्या चीजें हैं? नैमिषारण्य कितनी बढ़िया जगह है और उसका कितना असर है ।

इसके बाद हमने पाइंट 6 में कहा कि give wide publicity to its policies and programmes through all means of communication including print and electronic media. आज की डेट में इसका सबसे बड़ा असर है। संयोग से मेरे सामने इस कमेटी के चेयरमैन बैठे हुए हैं । अभी ट्विटर वाले को बुलाया है । पूरे देश भर में बड़ा हंगामा चल रहा है कि ट्विटर हो, इंस्टाग्राम हो, फेसबुक हो, प्रिंट मीडिया हो और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हो । आपको पब्लिसिटी देकर यह बताना है कि हम इस तरह की पॉलिसी बना रहे हैं या यह योजना हम इंप्लीमेंट कर रहे हैं, यह योजना हमको राज्य सरकार ने दी है, यह योजना हमको मेंबर ऑफ पार्लियामेंट ने दी है । इस योजना का फायदा है या नुकसान है । इस योजना में हमने पैसा दिया, तो वह काम चल रहा है या नहीं चल रहा है । एक प्रॉपर वे में यदि आप फीड बैक लेना शुरू करेंगे, तो ठीक है । कुछ आपको निगेटिव मिलेगा कि पैसा हो गया, करप्शन हो गया, चीजें हो गईं। आप यदि उसकी फोटोग्राफ अपलोड करवाएं, जैसे माननीय प्रधान मंत्री जी हम लोगों से जो कार्यक्रम कराते हैं, वी.के.सिंह साहब आप तो गवाह हैं कि मोटर साइकिल यात्रा हमने की या नहीं की, हेलमेट के साथ फोटो डालो। आप किसी बस्ती में रात में रुकते हो या नहीं रुकते हो, उसका भी फोटो लोड करो। यह नहीं है कि वह किसी मास्टर की तरह काम करते हैं। वह यह है कि जैसे अभी प्रधान मंत्री आवास योजना बन रही है, तो उसका गृह प्रवेश हुआ कि नहीं हुआ, वह देखते हैं । वह जीपीएस पर पूरा लोड होता है । उसी तरह से आपने योजना में जो पैसा दिया, यदि इस मोड का हम उपयोग करेंगे, तो आपको मेरे से ज्यादा खबर मिलेगी । मैं जो आपको फीड बैक दूंगा और यह जो फीड बैक है आपके डिपार्टमेंट को, इसीलिए मैंने इसके बारे में कहा ।

इसके बाद हमने कहा कि advise Central Government with regard to financial assistance to be provided to State Governments for creating/improving infrastructure at all tourist centres.

अब देखिए, एक छोटी सी बात है। हम आगरा जाते हैं। आगरा सात अजूबों में एक अजूबा है । जितने लोग आते हैं, उनको हम आगरा ले जाते हैं। आगरा स्टेशन से उतरकर यदि हमको ताजमहल जाकर देखना है, तो आपने उसको देखा है कि हम इतने वर्षों में एक बढ़िया रोड नहीं बना पाए। कहां रिक्शा चल रहा है, कहां साइकिल चल रही है, गाड़ी में कौन स्क्रेच लगा देगा, हम उसे नहीं बना पाए । कई फॉरेन डिग्निटरी के साथ बड़े लोग वहां जाते हैं। जनरल वी.के.सिंह साहब गए होंगे । इनके लिए तो सुविधा है कि फॉरेन डिग्निटरी को ले जाते हैं, तो आप ट्रैफिक रोक देते हैं, उनको लेकर चले जाते हैं, लेकिन आम लोगों के बारे में सोचिए । यह इनफ्रास्ट्रक्चर कौन डेवलप करेगा? वहां का बढ़िया एयरपोर्ट चालू होगा या नहीं, इसके बारे में कौन सोचेगा?

उसकी कनेक्टिविटी कैसे होगी, उसके बारे में कौन सोचेगा? 'उड़ान' के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री जी सोच रहे हैं, ढाई हजार रुपये में आप कैसे आगरा पहुंचेंगे, कैसे चप्पल वाले लोग पहुंचेंगे, सवा सौ जगहों पर छोटे-छोटे एयरपोर्ट या एयर स्ट्रिप के माध्यम से डेवलपमेंट हो रहा है। लेकिन रोड कौन बनाएगा?

मान लीजिए, आगरा एक्सप्रेसवे बन गया, आगरा एक्सप्रेसवे का मेन्टेनेंस कौन करेगा, मान लीजिए किसी तरह से एक्सिडेंट हो गया, रोज दो-चार एक्सिडेंट होते हैं, उसके लिए हमने कौन सी फैसिलिटी क्रिएट की है, कौन सी पुलिस है, सीआरपीएफ होती है, बीएसएफ होती है या वहां की लोकल पुलिस होती है। उसको पता ही नहीं है कि हमको किसके साथ कैसा बिहेव करना है। आपको नहीं लगता है कि टूरिज्म पुलिस हो, जैसे सीआईएसएफ एक कन्सनट्रेटेड पुलिस हो गया है, सेन्ट्रल इंडस्ट्रियल सिक्युरिटी फोर्स है, वह केवल इंडस्ट्री को देखता है, आप एयरपोर्ट पर देखिए वह कितना अच्छा काम कर रहा है, वह प्रोपर प्रोटोकॉल दे रहा है, बढ़िया से चेकिंग हो रहा है। आपको नहीं लगता है कि अब इस तरह का समय आ गया है कि हम एक टूरिज्म फोर्स क्रिएट करें। भारत सरकार द्वारा यह क्रिएट होना चाहिए, जो गाइड भी है, जो लोगों को सुरक्षा भी दे रहा है।

मेरा इस बिल के माध्यम से बड़ा विषय है, लोगों को सुरक्षा नहीं मिल रही है। हमारे यहां कई बार एडवाइजरी जारी कर देते हैं, उसके लिए विदेश मंत्रालय हमेशा लड़ता रहता है, कभी कहा जाता है कि स्वाइंन फ्लू हो गया है, भारत मत आइए, कभी कहेगा, निर्भया जैसा कांड हो रहा है, रेप हो रहा है, आप नहीं आइए। आप समझिए कि कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा बना कर जिसे हम रोकने का प्रयास करते हैं, उसमें इसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसके बाद हमने कहा, जो इसी से जुड़ा हुआ है *Provide better connectivity to all place of tourist importance by way of creation of adequate infrastructure*. वर्ष 2011-12 में एक कमेटी बनी, टूरिज्म मिनिस्टर उसके अध्यक्ष होते थे। रेलवे, एयर, नेशनल हाईवे और स्टेट के साथ डिस्कशन करके इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलप करना था। 2011 में नोटिफिकेशन हो गया। अब मेरा सवाल है कि आठ सालों में, साढ़े चार साल अपने और उसके पहले के चार साल यूपीए सरकार के, तो इस आठ और साढ़े आठ सालों में हमने इस तरह की कितनी बैठकें लीं। जब रेल बजट आता है तो टूरिज्म मंत्रालय ने कितनी चिट्ठी लिखी कि यह कनेक्टिविटी हमारे लिए जरूरी है। नेशनल हाईवे को कितनी चिट्ठी लिखी है कि यहां नेशनल हाईवे बनना जरूरी है। स्टेट पीडब्ल्यूडी को कितनी चिट्ठी लिखी है कि यह जरूरी है, सिविल एविशन को कितनी बार चिट्ठी लिखी है कि यह जरूरी है, कितनी बार आपने कॉमर्स मंत्रालय को कहा है कि हमारे यहां इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर बना दीजिए, यह जरूरी है, कितनी बार विदेश मंत्रालय से आपने कन्सल्ट किया है कि आपके टूरिस्ट फ्लो में कमी आ रही है, इसमें एम्बेसी से सहयोगी की आवश्यकता है।

मेरा आपसे आग्रह है कि कमेटियां बन जाती हैं, टूरिज्म मिनिस्टर इसके हेड होते हैं, मैं उसका नोटिफिकेशन लेकर आया हुआ हूं। आप अलग-अलग मंत्रालय के साथ बैठ कर यदि यह बैठक करेंगे, वाइबेलिटी गैप फंडिंग का सवाल है, जहां गैप हो जाएगा। हमने कहा कि मनरेगा की तरह पांच हजार करोड़ रुपये का बजट होना चाहिए। जहां गैप हो जाएगा, उस गैप को पूरा करने के लिए इसका उपयोग कीजिए। इससे लगेगा कि हम बड़ा काम कर रहे हैं। इसके बाद हमने कहा है Set up tourist facilitation centres at all airports and railway stations with a view to facilitate travelling, boarding and lodging for the tourists including reservation in air services, trains, buses, hotels and motels. आप यह समझें कि स्विटजरलैंड टूरिज्म में क्यों इतना आगे चला गया? एक ही पास लेना है, उसी पास से रेल है, उसी पास से आप बस में चले जाइए, उसी से आपको बोट की भी ड्राइविंग मिल जाएगी। एक ही पास है, दो पास नहीं लेने हैं। रेलवे की टाइमिंग परफेक्ट है, यदि ग्यारह बज कर एक मिनट लिखा हुआ है तो ग्यारह बज कर एक मिनट पर ही ट्रेन आएगी, लिखा हुआ है कि ग्यारह बज कर पांच मिनट पर बस यहां से वहां जाएगी, फिर लिखा हुआ है कि यह बस आपको वहां पहुंचाएगी और यह बोट ग्यारह बज कर बीस मिनट पर यहां से वहां ले जाएगी।

किसी से कोई मतलब नहीं है, भाषा का कोई मतलब नहीं है। वहां कोई स्विस् भाषा बोलता है, कोई जर्मन बोलता है, कोई फ्रेंच बोलता है। यहां बहुत लोगों को अंग्रेजी नहीं आती, यहां से जो लोग जाते हैं उनको न तो फ्रेंच आती है, न जर्मन आती है और न स्विस् आती है। लेकिन फिर भी यहां के लोग वहां जाते हैं क्योंकि उनको सारी सुविधा मिलती है। वहां कोई ऐसा रेलवे स्टेशन नहीं है जहां टूरिस्ट इन्फॉर्मेशन सेंटर न हो। कोई ऐसी जगह नहीं है जहां इस तरह की फैसिलिटीज न हो। कोई ऐसा एयरपोर्ट नहीं है जहां आपको लोग सहयोग करने के लिए तैयार न हों। अपने देश में कितने इस तरह के सेंटर्स हैं? मान लीजिए स्टेट ने बनाया है, मैं आपको बताना चाहता हूं कि इन ही के पैसे इन्होंने हमारे यहां दो जगह देवघर और बासुकीनाथ में टूरिज्म सेंटर बनाने के लिए पैसा दिया। दस साल से पैसा दे दिया लेकिन आज तक नहीं बन पाया है, आज तक बना ही नहीं है। मैं दूसरों की बात नहीं छोड़ता हूं। जब तक आप यह नहीं करेंगे, आप कैसे टूरिस्ट्स को बढ़ाएं? मेरा सुझाव है कि आप इसे इन्कलूड कीजिए।

महोदय, इसके बाद हमने कहा कि Conduct organised tours to different tourist centres. जैसे ही देवघर गए तो उसके पास की जगह को देखना होता है। मान लीजिए कोई टैक्सी बुक करके जाना चाहता है, तो पता होना चाहिए कि यहां से वहां तक टैक्सी का इतना किराया है। दूसरे की बात छोड़िए, हम घूमते रहते हैं क्योंकि जनपथ में अनुराग जी का घर है। हमें कभी-कभी जाने का मौका मिल ही जाता है जब लंच या डिनर कराते हैं, नहीं तो हम वैसे भी चाय पीने चले जाते हैं। वहां दुनिया भर के टूरिस्ट्स दिखाई देते हैं। वे ऑटो और टैक्सी वालों से लड़ते हुए नजर आते हैं। मैं देखता हूं कि वे उनको इतना चार्ज करते हैं कि यदि उनको क्वाट प्लेस ले जाएंगे तो

जहां 100 या 50 रुपए ऑटो का भाड़ा होगा, उससे 500 रुपए वसूलने की बात करते हैं, क्योंकि इस तरह के सेंटर्स ही नहीं हैं। हमने होटल्स के बाहर ऐसा कुछ बनाया ही नहीं है कि यह आपको यहां से वहां लेकर जाएगा। एक गाइडिड होना चाहिए कि यह एसी बस है आपको यहां ले जाएगी, नॉन एसी बस है आपको वहां ले जाएगी, टैक्सी आपको वहां ले जाएगी, ऑटो से जो जाना चाहते हैं ये लेकर जाएंगे, रिक्शे का भाड़ा इतना है। आप जब तक इसे निर्धारित नहीं करेंगे और इसे स्टेट और इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ डिसकशन नहीं करेंगे तो टूरिज्म का डेवलपमेंट नहीं हो पाएगा। यह बड़ा विषय है।

मैंने जैसे कहा कि इस दुनिया में सबसे ज्यादा रोजगार कोई दे रहा है तो वह टूरिज्म ही दे रहा है। रोजगार के डाटा पर जो इतनी बातचीत हो रही है, वह डाटा एक मिनट में खत्म हो जाएगा। बिजनैस इतना रोजगार नहीं देता। किसी भी देश का डेवलपमेंट बिना टूरिज्म के नहीं होता है। आज वही देश प्रॉस्पेरिटी की तरफ बढ़ रहा है जहां टूरिज्म है। केरल, जहां से मंत्री जी आते हैं, सबसे बड़ा उदाहरण है। वी.के. सिंह जी, कुरुक्षेत्र में इतना बड़ा महाभारत हो गया, सरस्वती नदी को हरियाणा में खोज रहे हैं। आप समझें कि जब से मैं पैदा हुआ हूं सरस्वती खोजी जा रही है। यह कब तक खोजी जाएगी? कुरुक्षेत्र के डेवलपमेंट के लिए केवल एक कॉर्नर के लिए इतना पैसा दे दिया, उतना पैसा दे दिया, इससे क्या होगा? शिमला में मॉल रोड अपना अस्तित्व खत्म कर रहा है। मसूरी में मॉल रोड दिखाई नहीं देता है, अंधाधुंध पेड़ों की कटाई हो रही है।

मैं बद्रीनाथ और केदारनाथ के दर्शन के लिए जा रहा था। मैं बद्रीनाथ जी के दर्शन कर पाया, केदारनाथ के दर्शन इसलिए नहीं कर पाया क्योंकि जिस ट्रेन से मैं जा रहा था वह ट्रेन लेट हो गई। मुझे किसी ने कहा कि आप हरिद्वार उतर जाइए, वहां से देहरादून चले जाइए, यह ज्यादा अच्छा रास्ता है क्योंकि ट्रेन लेट हो गई है। आपको आश्चर्य होगा कि हरिद्वार से देहरादून जाने में पांच घंटे लगे जबकि मुझे एक या सवा घंटे में पहुंच जाना चाहिए था। यहां अच्छी रोड ही नहीं है, इन्फ्रास्ट्रक्चर ही नहीं है, किऑस है। यदि आप जून-जुलाई के महीने में जाएंगे तो इस तरफ रेंगती हुई गाड़ियां नजर आएंगी। कोई भी चीज नहीं है।

मैं हरिद्वार, शिमला, देहरादून की बात कह रहा हूं जो कि इतने बड़े टूरिस्ट सेंटर्स हैं। लवासा को किसी तरह से बनाने की कोशिश हो रही थी, आपको पता है कि कैसे करप्शन के केस में फंस गया, क्या कारण हुआ कि यूपीए सरकार ने इसे बनने नहीं दिया? आजादी के बाद से आज तक हमने एक भी टूरिस्ट प्लेस डेवलप नहीं किया, जो भी किया वह अंग्रेजों ने डेवलप किया। हम अंग्रेजों को लाख गाली दें, लेकिन इन्फ्रास्ट्रक्चर के मामले में वे जो करके गए, मोदी जी के आने के बाद ही वह हो रहा है। इन लोगों को गुस्सा लगता है, 60 सालों में कांग्रेस ने केवल करप्शन के अलावा कोई काम नहीं किया।

हमने कहा है –Set up hotels, restaurants and motels in all tourist centres with a view to catering to the needs of different categories of tourists.

17 00hrs

हमारे यहां टाटा है। 4 से 5 करोड़ लोग हमारे यहां आते हैं। एक बढ़िया होटल नहीं है। होटल इंडस्ट्री के लोग जाना नहीं चाहते हैं। मैं बार-बार उनको 10 साल से रिक्वेस्ट कर रहा हूं कि वहां एक थ्री स्टार, फोर स्टार और फाइव स्टार होटल चाहिए। लेकिन, मैं उनके ऊपर दबाव नहीं बना सकता। मंत्रालय का इतना जोर नहीं होता है कि हम बना पाएं। जब वहां अच्छे होटल नहीं होंगे तो हमारे यहां जो हाई एन्ड टूरिस्ट हैं, वे रात में रुकते ही नहीं हैं। जब वे रात में नहीं रुकेंगे, पैसा नहीं देंगे तो हमारे इलाके का क्या डेवलपमेंट होगा। इतना होने के बाद भी यदि मेरे इलाके का डेवलपमेंट नहीं हो रहा तो उसका कारण यही है। अगर कार्पोरेशन ऐसे वे में काम करेगी, लोगों को इन्सिस्ट करेगी कि अभी इस साल मेरा टारगेट यह है, आप यहां आओ, यहां आपको काम करना है, आप यहां आओगे, हम आपको फैसिलिटी देंगे, हम आपको इनकम टैक्स का रिबेट देंगे, हम आपको जी.एस.टी. का रिबेट देंगे।

इसके बाद हमने कहा है कि 'Prepare a list of paying guest accommodation available at places having inadequate hotel or motel accommodation.' कॉमनवैलथ गेम्स के समय, सभापति महोदय मैं 5-7 मिनट में समाप्त करूंगा, घंटी नहीं बजाइएगा, लोगों को लगेगा कि फिर घंटी बजी। मैं कह रहा हूं कि इस तरह का जहां एकोमोडेशन नहीं है, यदि वहां पर पेइंग गेस्ट एकोमोडेशन देंगे, तो लोगों को रोजगार मिलेगा, लोगों के घर गेस्ट आएंगे, जिस तरह से हमारे यहां 'अतिथि देवो भवः' की परम्परा रही है।

इसके बाद, कल्चरल फंक्शन कैसे होगा, दूसरे कंट्रीज के साथ को-आर्डिनेशन कैसे होगा? आर्ट म्यूजिक भी एक बड़ा विषय है। रवीन्द्र संगीत खत्म हो रहा है या इस तरह के जो संगीत वाले लोग हैं, राजन मिश्र और साजन मिश्र से लेकर जसराज के बारे में लोग अवेयर नहीं हैं। यदि हम इस तरह की चीजें डेवलप करेंगे तो मुझे लगता है कि हम इस देश में एक बड़ी क्रांति ला सकते हैं। जिस तरह से आप कृषि क्रांति, नीली क्रांति, हरित क्रांति की बात करते हैं, उसी प्रकार रोजगार और इन्फ्रास्ट्रक्चर क्रांति भी एक सबसे बड़ा विषय है। मैं जाते हुए श्री वल्लूर साहब ने जो कहा था, जो आप ही के यहां के हैं, उन्होंने कहा कि – “दरिद्र वह होता है, जो दूसरों को खिलाता नहीं है और जो अतिथि की सेवा करता है वही सबसे अमीर आदमी है।” श्री वल्लूर तमिलनाडु के बहुत बड़े कवि थे। अतिथि वह है, जो हमारे यहां आता है और टूरिस्ट्स से बड़ा अतिथि कोई नहीं है। सभापति महोदय, मेरा आपके माध्यम

से सरकार से आग्रह है कि मेरे इस बिल को कंसिडर कीजिए, इसको पास कीजिए, इसके लिए पॉलिसी बनाइए और इस देश की इकोनॉमी को बढ़ाने में योगदान कीजिए। इन्हीं शब्दों के साथ जय हिन्द, जय भारत।

HON. CHAIRPERSON: Motion moved:

“That the Bill to provide for establishment of a Tourism Promotion Corporation of India to promote and develop tourism in the country and for matters connected therewith, be taken into consideration.”

श्री अनुराग सिंह ठाकुर (हमीरपुर): धन्यवाद सभापति जी। माननीय निशिकान्त दुबे जी ने जो टूरिज्म प्रमोशन कार्पोरेशन ऑफ इंडिया बिल आज सदन में हम सबके सामने रखा है, मैं सबसे पहले अपनी ओर से और सदन की ओर से और हृदय की गहराइयों से इनका आभार प्रकट करता हूँ कि इतने महत्वपूर्ण विषय को लेकर आज इन्होंने अपनी बात यहां पर रखी और शानदार ढंग से रखी है। मैं इनको अपनी ओर बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। जब युवाओं की बात करूँ तो रोजगार की बात भी आती है। जब एक टूरिस्ट कहीं भी जाता है, तो जाने-अनजाने, डायरेक्ट-इनडायरेक्ट, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से 35 से 36 लोगों को उससे स्वरोजगार के अवसर मिलते हैं। जब कोई टूरिस्ट कहीं जाता है, तो बहुत इच्छाएं लेकर जाता है। जैसे हम लोग दिन-प्रतिदिन इतना काम करते हैं, हम लोगों को छुट्टियां कम मिलती हैं, लेकिन जब मिल जाती है, तो ऐसा लगता है कि किसी ऐसी जगह पर जाएं जहां शरीर की थकावट कम हो, मानसिक तौर पर तंदुरुस्त होकर आएँ।

माननीय सभापति जी, आज अगर हम देखें तो पूरी दुनिया भर में जो टूरिज्म है, जी.डी.पी. में उसकी हिस्सेदारी लगभग 9 प्रतिशत है। दुनिया भर में करोड़ों लोगों को रोजगार केवल टूरिज्म के माध्यम से मिलता है। आज पूरी दुनिया में लगभग बीस करोड़ नौकरियां केवल टूरिज्म उपलब्ध करवाता है। भारत में भी मैं देखता हूँ, जब से माननीय मोदी जी की सरकार आई है, कुछ अच्छे निर्णय लिए गए, चाहे वीजाज ऑन एराइवल, ई-टूरिस्ट वीजाज की बात हो, डेवलपमेंट ऑफ डिफ्रेंट टूरिज्म सर्किट्स की बात हो। यही नहीं, जो सबसे बड़ी बात है, विदेश से जो लोग यहां आते थे, वे पहले कूड़ा-कचरा और गंदगी देखकर तरह-तरह की बातें करते थे। स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से हम देश में बहुत बड़ा बदलाव लाए हैं, जिसके लिए मैं माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रति बहुत-बहुत आभार प्रकट करता हूँ। हिन्दुस्तान के लोगों ने उसे दिल से अपनाया और सफल बनाया है, इसके लिए मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करना चाहता हूँ।

माननीय निशिकान्त जी मेरे मित्र भी हैं। मैं कहने वाला था, वैसे तो ब्राह्मण कह दो तो वैसे ही बुद्धिमान होते हैं, पता ही है, लेकिन वह उच्च कोटि का हो, इतने विस्तार में बात की जाए और सारी बातें उसमें आ जाएं तो इतने शानदार ढंग से उन्होंने इस विषय को रखा है, मैं इसके लिए उनको बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं। जिस व्यक्ति ने दुनिया का भ्रमण किया हो, जिसके दिल में एक उमंग हो, उम्मीद हो कि मुझे अपने राज्य को टूरिज्म के बलबूते पर भी आगे ले जाना है। उन्होंने यह नहीं कहा कि वहां पर जो माइन्स उपलब्ध हैं, उनके माध्यम से क्या करना है, बाकी क्या चीजें करनी हैं, बल्कि उन्होंने यह कहा कि मैं दुनिया भर के लोगों को, चाहे देवघर की बात हो या झारखण्ड के बाकी क्षेत्रों की बात हो या बिहार के मुंगेर की बात हो, कैसे वहां लेकर जाएं, उसके लिए आधारभूत ढांचा कैसे बने, इस बात को उन्होंने यहां पर रखा है, जिसके लिए मैं इनका स्वागत करता हूं। मुझे लगता है कि सबसे बड़ी कमी क्या आती है, अगर किसी को मेरे राज्य हिमाचल प्रदेश तक आना है, इनको गोड्डा, झारखण्ड से आना होगा तो कैसे आएंगे? सभापति महोदय, अगर आपको तमिलनाडु से हिमाचल प्रदेश आना हो तो क्या होगा? आपको या निशिकान्त जी को वहां आने के लिए पहले दो या तीन फ्लाइट्स बदलकर आना पड़ेगा। अगर हिमाचल प्रदेश में एयर कनेक्टिविटी नहीं होगी तो आप सबसे पहले अपना ट्रेवलिंग का बिल कैलकुलेट करेंगे। अगर चार लोगों की टिकट बनानी पड़ेगी तो शायद विदेश की टिकट सस्ती होगी और हिमाचल प्रदेश में आने की टिकट महंगी पड़ेगी। Connectivity is the key, time is precious. आज समय का मूल्य सबसे ज्यादा है। हमें मुश्किल से दो दिन की छुट्टी मिलेगी तो सब यह सोचेंगे कि हम तीन घण्टे में कहां पहुंच पाएंगे, हम वहां जाएंगे। जहां शरीर को और थकावट न हो, आराम देने लायक जगह मिलेगी, हम वहां पर जाएंगे। हमारे पास जो दुनिया को दिखाने के लिए है, चाहे हेरिटेज साइट्स हों, चाहे रिलीजियस साइट्स हों, चाहे हमारे कल्चरल वेन्यूज हों या प्राकृतिक सौन्दर्य वाली जगह हो, क्या हम उन स्थानों के लिए कनेक्टिविटी बेहतर करने का कोई प्रयास करेंगे? मैं दिल खोलकर कह सकता हूं कि मोदी जी ने ऐसा किया है। चाहे उत्तराखण्ड की चार धाम यात्रा हो, हजारों-करोड़ रुपये का प्रावधान किया और उस पर काम करने का प्रयास नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने किया, इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूं।

मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में कितनी टूरिज्म साइट्स हैं, क्या इसका कोई लेखा-जोखा आपके पास है? उनकी एयर, रेल, रोड और वाटर कनेक्टिविटी कितनी है? जो सवाल निशिकान्त जी ने पूछा, जब देश का बजट बनता है तो क्या हमारा टूरिज्म मंत्रालय उनको लिखकर देता है कि हमें यहां से नेशनल हाइवे चाहिए, हमें यहां से रेल कनेक्टिविटी चाहिए या हमें वहां एयरपोर्ट चाहिए? किसी सांसद से ज्यादा वे उस बात को गंभीरता से लेंगे, जब भारत सरकार का ही एक मंत्रालय ऐसा लिखकर देगा कि देश के इस कोने में कनेक्टिविटी चाहिए। उसको गंभीरता से लिया जाएगा और उन क्षेत्रों में टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा, ऐसा मेरा मानना है।

माननीय सभापति जी, जहां दुनिया भर में टूरिज्म की ग्रोथ लगभग चार प्रतिशत हुई है, वहीं पर भारत ने 9.7 प्रतिशत ग्रोथ की है। मैं अपनी ओर से माननीय मंत्री जी आपको, भारत सरकार और माननीय प्रधान मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूं और यह भी कहना चाहता हूं :-

“बंधी नियमित जिंदगी से होती है सबको घुटन

इससे मन बहलाव के लिए जरूरी है पर्यटन

जरूरी है पर्यटना”

इसलिए हम पर्यटन के विस्तार में न केवल रोजगार की बात करते हैं, बल्कि हर नागरिक को शारीरिक और मानसिक तौर पर तंदुरुस्त रखने का प्रयास करते हैं। ऐसे कौन-कौन से क्षेत्र या एवेन्यूज हो सकते हैं? मैं हिमाचल प्रदेश से चुन कर आया हूं। वहां प्राकृति सौंदर्य, पहाड़, पानी, जंगल, खेत, सेब के बगीचे, बहुत पुराने-पुराने मंदिर और धार्मिक स्थल भी हैं। एडवेंचर स्पोर्ट के लिए भाखड़ा बांध और पोंग बांध जैसे स्थान भी हैं। लेकिन, वहां पर न शिकारे हैं, न बैकवाटर्स वाली बोट्स हैं, जिनमें हम रह पाएं, न एडवेंचर टूरिज्म के लिए पर्याप्त सुविधाएं हैं। अगर हम स्काई रेल की बात करें तो उसकी सुविधा भी नहीं है। हमारे यहां जंगल हैं, मगर हमारे पास वैसे प्रावधान नहीं हैं, पैसे नहीं हैं। देवी-देवताओं की पूजा करने के लिए मन्दिर हैं। अगर हिमाचल प्रदेश की आबादी 70 लाख हैं तो हमारे यहां दो करोड़ से ज्यादा टूरिस्ट्स आते हैं, उसकी आबादी का तीन गुणा ज्यादा। लेकिन, उसके लिए उतना बड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर होना जरूरी है, चाहे हाईवेज हैं, रोडवेज हैं। अगर कोई वहां के मन्दिर में आ भी गया तो क्या वहां पर उस मन्दिर के इतिहास को लेकर कोई ऑडियो-विजुअल्स हैं या नहीं? क्या कभी आपके मंत्रालय ने वह करने का प्रयास किया? क्या वहां पर गाइड्स उपलब्ध हैं? मैं आपसे जानना चाहता हूं कि देश भर में कितने गाइड्स की ट्रेनिंग इस विभाग ने आज तक की है? हमारे पास कितने गाइड्स ऑन-रिकॉर्ड उपलब्ध हैं? बहुत सारे ऐसे लोग भी बाहर से आते हैं, जो प्राइवेट गाइड भी चाहते हैं, ग्रुप के लिए गाइड्स भी चाहते हैं। अगर गाइड्स न हो तो वहां पर टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर सकते हैं। आजकल तो ऐसे इक्विप्मेंट्स मिलते हैं कि आप अपने हेडफोन में उसे लगाकर प्रि-रिकॉर्डेड सब कुछ सुन सकते हैं। हमारे यहां कांगड़ा फोर्ट है, वह सरकार ने नहीं किया है, वहां के जो राजा थे, उनके परिवार ने वह किया है। उनका अपना एक एनजीओ या अपनी संस्था है, उसके माध्यम से किया है। उनके इतिहास के बारे में बताता है, लेकिन मैं हिमाचल के किसी भी मंदिर में चला जाऊं, उसके मंदिर के इतिहास के बारे में बताने के वहां पर कोई तैयार नहीं है। वहां न कोई बोर्ड है और न कोई ऑडियो विजुअल है। हम क्या कर सकते हैं?

मैं रिकॉर्ड देख रहा था, वह बैंकॉक हो, जिसके बारे में निशिकांत जी ने कहा है। हम थाईलैंड, मलेशिया या दुनिया के अन्य देशों की बात करें, जो बहुत छोटे-छोटे देश हैं। आप सिंगापुर की बात कर लीजिए। वहां पर हम से ज्यादा टूरिस्ट्स जाते हैं। उन्होंने टूरिस्ट को आकर्षित करने के लिए कुछ न कुछ ऐसा बनाया है, जिसका एक आकर्षण बना है और दुनिया भर के लोग वहां पर जाते हैं। निशिकांत जी ने लंदन की बात की है। अगर वहां पर मैडम तुसाद का म्यूजियम देखना हो, एक भूतों वाली या बिल्डिंग खड़ी कर देते हैं, उसमें देखना हो तो हमें वहां चार घंटे लाइन में लगना पड़ता है, बीस पाउंड की टिकट खरीदनी पड़ती है, यानी आपको 2000 रुपये की टिकट खरीदनी पड़ेगी। उनको बेचना आता है, मार्केटिंग करना आता है। क्या हम मार्केटिंग में फेल हो गये? हमारा प्रोडक्ट उनसे कई गुना बेहतर था। एक बार कोई राजस्थान आ जाए तो छोटी हवेलियां हों या बड़े महल हों, उनका अपना आकर्षण का एक केन्द्र है। राजस्थान ने कुछ हद तक तरक्की की है। भैरों सिंह शेखावत ने वह किया, वसुंधरा राजे जी ने वह किया। उन्होंने उनको वापस खड़ा करने का प्रयास किया। जो महलों के राजा थे, उनके पास भी कमाई के साधन खत्म हो गए थे, लेकिन भैरों सिंह जी की शुरुआत ने जहां एक ओर उनके बड़े-बड़े महलों और उनकी हवेलियों को बचाने का प्रयास किया, वहीं दूसरी ओर लाखों लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी उत्पन्न किए हैं।

HON. CHAIRPERSON: Anurag ji, I have a list of six to seven hon. Members who want to speak on this important Bill. So, please conclude your speech within two to three minutes.

SHRI ANURAG SINGH THAKUR : Sir, I will take only 25 minutes because I have to speak on a lot of things and I have just started.

सर, निशिकांत जी द्वारा लाये गये बिल के साथ यह अन्याय होगा, यह देश में करोड़ों रोजगार पैदा करेगा। मैं इसके बाद जम्मू-कश्मीर पर भी आऊंगा।

श्री दुष्यंत सिंह जी की मैं बात कर रहा था, उन्होंने धौलपुर में अपने महल को एक बहुत ही सुन्दर होटल में कनवर्ट किया है। न केवल देश के, बल्कि विदेशी लोग भी वहाँ आते हैं। यही नहीं, जब मैं धार्मिक स्थलों की बात करता हूँ, चाहे माता वैष्णो देवी का मन्दिर हो, तिरुपति बालाजी का मन्दिर हो, बाकी मन्दिर हों, इन सभी ने अपने आप को ट्रांसफॉर्म किया है। यदि हम गोल्डन टेम्पल की बात करें, तो जिस तरह से यहाँ की संस्थाओं ने काम किया है, उससे वहाँ पर टूरिज्म में पाँच गुना वृद्धि हुई है। आज अमृतसर की अर्थव्यवस्था खड़ी है, वहाँ कोई इंडस्ट्री नहीं है। गोल्डन टेम्पल और वाघा बॉर्डर के कारण लोग वहाँ जाते हैं। अमृतसर का जो खाना है, उस व्यंजन को भी दुनिया भर में प्रसिद्ध किया गया है क्योंकि वहाँ का खाना कहीं और नहीं मिल पाता है। बिहार का

लिट्टी-चोखा हो, राजस्थान का दाल-बाटी चूरमा हो, साउथ इंडिया की डिशेज़- इडली, डोसा से लेकर बाकी व्यंजन हों, क्या हम लोग इन सबको लेकर एक अट्रैक्शन का केन्द्र खड़ा कर सकते हैं? Can there be food festivals around the country so that tourists coming into the country know that in this month you will have food festival here, you will have film festival here, and you will have music festival here?

हम म्यूज़िक फेस्टिवल, फूड फेस्टिवल आदि आयोजित करें ताकि उनमें आसपास की अलग-अलग संस्कृतियों को, अलग-अलग व्यंजनों को दिखाने का अवसर मिले। मैं सदन के माननीय सदस्यों से पूछता हूँ कि नॉर्थ-ईस्ट के कितने राज्यों में आपको जाने का मौका मिला है?

सभापति जी, क्या आप नॉर्थ-ईस्ट के सभी 'सेवन सिस्टर्स' राज्यों में चले गये हैं? हिन्दुस्तान के कितने युवा नॉर्थ-ईस्ट के मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, मिजोरम और बाकी राज्यों में गये होंगे? नेशनल इंटिग्रेशन का यह एक बहुत बड़ा प्रयास हो सकता है।

मैंने इसकी शुरुआत की है। मैंने अपने संसदीय क्षेत्र के मेधावी छात्रों, जो दसवीं और बारहवीं कक्षा में पहले सौ स्थानों पर आये थे, को मौका दिया। मैंने 'सांसद भारत दर्शन' योजना शुरू की। हवाई जहाज के द्वारा उनको बेंगलोर, पुणे, मुम्बई और हैदराबाद की यात्रा करायी। वे लोग इसरो सैटेलाइट सेन्टर देखने गये, स्टेडियम्स देखने गये। उनको भारत के उपराष्ट्रपति जी ने अपने घर पर बुलाकर नाश्ता कराया, उनसे वार्तालाप किया। वे राष्ट्रपति भवन भी गये। मोहम्मद अजहरुद्दीन और बृजेश पटेल जैसे खिलाड़ियों ने उनके साथ एक-एक घंटा बिताया, बेंगलोर और हैदराबाद के स्टेडियम्स दिखाये। उनको टेक्नोलॉजी समिट में प्रोडक्ट लांच करने से लेकर विभिन्न कम्पनियों से मिलने का अवसर मिला। चेतन भगत जैसे राइटर ने हमारे हिमाचल प्रदेश के बच्चों को अपने घर बुलाया और अपनी माता जी द्वारा बनाया गया भोजन खिलाया, ऑटोग्राफ दिया और उनको अपनी किताबें भी दीं। इससे उन बच्चों को एक्सपोज़र भी मिला, बाकी राज्यों की संस्कृति और वहाँ के स्थलों को देखने का अवसर भी मिला। जब वे वापस जाएंगे, तो उनकी बातें सुनकर हिमाचल प्रदेश के न जाने कितने और लोग अलग-अलग राज्यों में जाना चाहेंगे।

'सांसद भारत दर्शन' के तहत यात्रा पर जाने से पहले मैंने उन बच्चों से पूछा कि हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों में कितने बच्चों ने सभी जिले देखे हैं? एक बच्चे ने भी हाथ खड़ा नहीं किया। मैंने कहा, छः जिले किसने देखे हैं, तो दो बच्चों ने हाथ खड़े किये। तीन जिले देखने वाले दो सौ बच्चों में से केवल चार या पाँच बच्चे थे।

अगर हम अपना प्रदेश भी नहीं देख पाते हैं, तो पूरे देश को देखना तो बड़ी दूर की बात है। महात्मा गांधी जी भी देश को तब समझ पाए, जब उन्होंने ट्रेन में बैठकर देश भर का भ्रमण किया और तब वे इस देश की लड़ाई लड़ पाये।

माननीय मंत्री जी, मेरा अनुरोध है, जैसा कि श्री निशिकांत जी ने कहा कि पाँच हजार करोड़ रुपये की व्यवस्था की जाए, तो आप कारपोरेट हाउसेज से बात कीजिए, भारत सरकार से बात कीजिए, यूथ, स्पोर्ट्स और एचआरडी मंत्रालय से भी बात कीजिए।

आप इन तीनों से बात कीजिए। अगर हम इस देश के नौजवान को अपना देश दिखाने का कार्यक्रम नहीं शुरू कर पाएंगे, तो एक बहुत बड़ी कमी हमारे युवाओं के विकास में रह जाएगी। इसलिए, मैं निशिकान्त जी का धन्यवाद करता हूँ। टूरिज़्म कॉर्पोरेशन के माध्यम से हम न केवल पर्यटन को बढ़ावा देंगे, हम आज की पीढ़ी और आने वाले पीढ़ियों को भारत दर्शन कराने का काम शुरू करेंगे। हम आने वाले भारत को नई बुलंदियों पर ले जाने का काम करेंगे। मेरे 'सांसद भारत दर्शन' के बाद कैंनेडा इंडिया फाउंडेशन ने हमारे साथ एग्रीमेंट किया। वे इस साल आठ बच्चों को कैंनेडा बुला रहे हैं। अगले कुछ दिनों में हमारे साथ ऑस्ट्रेलिया, दुबई और अबू धाबी के लोग भी टाई-अप्स कर रहे हैं। मेरे हिमाचल प्रदेश के बच्चों को वे अपने देशों में बुलाकर दिखाने के लिए तैयार हैं।

सभापति जी, अगर दुनिया के देशों में बैठे भारतीय हिमाचल प्रदेश के बच्चों को 'सांसद भारत दर्शन' से जोड़कर आज 'सांसद विश्व दर्शन' बनाने का काम कर रहे हैं, तो मेरा पर्यटन मंत्री जी से अनुरोध है कि वे भी इसे करें। हमारे विदेश राज्य मंत्री माननीय वी. के. सिंह जी यहां बैठे हैं। मैं आपसे भी अनुरोध करता हूँ कि हमारे यहां के बच्चों को विश्व दर्शन और भारत दर्शन के लिए ये प्रयास करना चाहिए। जहां-जहां हमारी फौज है, जहां-जहां उनकी यूनिट्स हैं, हमें वहां यह कार्यक्रम करना चाहिए कि स्कूलों के बच्चों को हमारी सेना के अधिकारियों और सेना बल के लोगों से मिलने का अवसर भी अलग-अलग जगह देना चाहिए। हमारे सैनिक कैसे रहते हैं, कैसे जीते हैं, इससे उनके अंदर सेना के प्रति भी एक अलग भाव बनेगा।

सभापति जी, मैं केरल की बात करना चाहता हूँ। केरल में लोग बैकवाटर्स देखने आते हैं, वहां की बोट्स पर रहना पसंद करते हैं, वहां की बोट-रेस को देखना पसंद करते हैं। सभापति जी, यही नहीं, केरल के आयुर्वेद ने, वहां की थेरेपी ने आज दुनिया भर में अपनी एक जगह बनाई है। लोग वहां पर रिलैक्सेशन के साथ-साथ अपनी हैल्थ की ट्रीटमेंट के लिए भी आते हैं। इसलिए हम इसको देश के बाकी राज्यों में कैसे लागू कर सकते हैं? मान लीजिए कोई राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड या जम्मू कश्मीर गया, तो वह केरल की आयुर्वेद मसाज को वहां कैसे पा सकता है, इसकी ओर हमें प्रयास करने चाहिए। हम वैलनेस सेंटर्स की बात करते हैं। मोदी जी ने योगा -

युनाइटेड नेशंस में - दुनिया भर के लिए 21 जून को योगा दिवस के रूप में मंजूर कराया। आज हिन्दुस्तान के हजारों लोगों को रोजगार मिल रहा है। आप दुनिया भर के एयरपोर्ट्स पर जाइए, मॉल्स में जाइए, वहां पर योगा रूम्स मिलेंगे - जैसे स्मोकिंग के लिए अलग चेंबर बना होता है, आज योगा रूम्स हर जगह बने हैं। भारत के कितने एयरपोर्ट्स पर योगा रूम्स हैं? भारत के कितने मॉल्स में योगा रूम्स हैं? भारत के कितने मंदिरों में योगा रूम्स हैं? हमें यह भी करना चाहिए - योगा को और बढ़ावा देने के लिए और वैलनेस - मैडिटेशन स्पा को भी बढ़ावा देने के लिए और इसके माध्यम से जितने लोगों को रोजगार मिल सकता है, उस ओर भी हमें प्रयास करना चाहिए।

सभापति जी, मेरे यहां हिमाचल प्रदेश में शेफर्ड्स को गद्दी कहते हैं, जो अपनी भेड़-बकरियों को लेकर पूरे पहाड़ों में घूमते हैं। उनकी ऊन को काटकर उससे कंबल बनता है, शॉल बनती है और ऐसी ट्वीड भी बनती है। यह हिमाचल की ट्वीड है। हमने हैरिस ट्वीड - स्कॉटिश वूल तो सुनी थी। आप हिमाचल प्रदेश की ट्वीड को देखिए। अगर और अच्छा प्रयास कर के इसको डिज़ाइन किया जाए, तो ये दुनिया के किसी कपड़े को मात दे सकती है। हिमाचल प्रदेश में जो एप्पल ऑर्चर्ड्स हैं, हम वहां लोगों को और बच्चों को लेकर जाएं, कि सेब पैदा कैसे किया जाता है, ओलावृष्टि से उसको बचाया कैसे जाता है, नैट कैसे लगता है, हिलस्ट्रॉम गन क्या होती है, ऑर्गेनिक फार्मिंग कैसे की जाती है, किसान का दर्द भी जानेंगे और बच्चों को पर्यटन करने का मौका भी मिलेगा और होम-स्टे योजना को हम बढ़ावा दे पाएंगे। जिन लोगों के पास घरों में दो-दो कमरे भी खाली हैं, वे दो-दो लोगों को ठहरा पाएंगे और घर का खाना भी खिलाएंगे।

सभापति जी, यही नहीं, फिल्मों की बात निशिकान्त जी ने की है। मैं सरकार का आभार प्रकट करता हूं। मैं स्टैंडिंग कमेटी ऑन आई. टी. का चेयरमैन हूं, उसमें इंफॉर्मेशन एण्ड ब्रॉडकास्टिंग भी आता है। हमने फिल्म इंडस्ट्री के चैलेंजों को समझने का प्रयास किया, क्योंकि हिंदी के विस्तार का काम भी फिल्म इंडस्ट्री ने किया है, हिन्दुस्तान को जोड़ने का काम भी फिल्म इंडस्ट्री ने किया है। समाज में जो कुरीतियां हैं, उनको जागरूक करने का काम भी फिल्म इंडस्ट्री ने किया है। स्विट्ज़रलैंड को टूरिस्ट डैस्टिनेशन बनाने का काम भी फिल्म इंडस्ट्री ने किया। कुल्लू मनाली, शिमला और चंबा को भी टूरिस्ट डैस्टिनेशन बनाने का काम किसी ने किया, तो फिल्म इंडस्ट्री ने किया।

हिन्दुस्तान के अंदर सिंगल विण्डो क्लीयरेंस नहीं थी। मोदी सरकार ने आकर सिंगल विण्डो क्लीयरेंस दी है। सिनेमेटोग्राफी एक्ट में बदलाव करने के लिए पायरेसी को खत्म किया जाए, वह भी मोदी जी ने किया है। इसके लिए मैं उनका आभार प्रकट करता हूं। लेकिन बड़ा विषय यह आता है कि हम फिल्मों के माध्यम से हिन्दुस्तान को दुनिया में कैसे दिखाएं? आज जो एन.आर.आइज़. दुनिया भर में बैठे हैं, जो भारत की पिकचरों को देख कर हजारों करोड़ रुपया भारत में आता है, क्या हम उनको टूरिस्ट के नाते भारत ला सकते हैं? क्या हम उनको आन्ध्र प्रदेश,

मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात या राजस्थान, मैं तो कहूंगा मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और गुजरात के, अगर हम उनको फॉरेस्ट रिजर्व्स दिखा दें, वहां पर शेर, वाइल्डलाइफ दिखा दें, वहां के वाटरफॉल्स दिखा दें, जो नियाग्रा फॉल्स से भी सुंदर होंगे, लेकिन कनेक्टिविटी, मार्केटिंग नहीं है। निहाल चंद जी के रेगिस्तान के सेण्ड ड्यूंस में अगर स्कूटर चला दें तो वहां पर जो देखने को मिलेगा, लोग दुबई में जाकर करते हैं, वह यहां पर भी हो सकता है। हजारों लोगों के लिए रोजगार मिल सकता है। क्या इस दिशा में हमारी सरकार या कोई भी सरकार आगे काम करने के लिए तैयार है? मेरा निवेदन माननीय मंत्री जी से रहेगा। हमारे पास वर्षों से विश्व गुरु हैं, धर्म गुरु हैं। वैसे अगर निशिकान्त जी का प्रवचन हो जाए तो वैसे ही लाखों लोग इकट्ठे हो जाएं, क्योंकि जितने विस्तार से आपने इस देश की संस्कृति के बारे बताया, वह अपने आप में अद्भुत है।

HON. CHAIRPERSON: Shri Anurag Singh Thakur, please conclude now. I have a long list of hon. Members who have to speak on this issue.

... (Interruptions)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर: सभापति जी, हाउस लम्बा, 7 बजे तक चल सकता है। यह आखिरी सेशन है। मेरा आपसे निवेदन है, यह प्राइवेट मेम्बर बिल है, इसमें समय सीमा तय मत कीजिए। मैं यह कहना चाहता हूं कि 14वीं, 15वीं और 16वीं लोक सभा, तीनों लोक सभा में मैंने किसी सदस्य को भारतीय संस्कृति के बारे में और टूरिज्म के क्षेत्र में इतने विस्तार से बात करते हुए नहीं देखा, जैसे निशिकान्त जी आपने की है। मुझे लगता है कि हमें ऐसे और सदस्य सदन में चाहिए, ताकि वे बार-बार हमें जागरूक कर सकें। दुनिया भर में म्यूजिक के फेस्टिवल होते हैं। लाखों लोग कोई ट्रान्स म्यूजिक फेस्टिवल के नाम से, कोई किसी और के नाम से वहां पर जाते हैं। गोवा में भी इकट्ठे होते हैं, लेकिन जो हमारी संस्कृति है, जैसे लगातार हम भरतनाट्यम की बात करते हैं, संगीत से लेकर हम बाकी नृत्यों की बात करते हैं। क्या हम उनको भी कहीं टूरिज्म के साथ जोड़ सकते हैं? जब हम इनक्रेडिबल इण्डिया का प्रमोशन करते हैं तो क्या हम इनको भी साथ में लेकर वह कर सकते हैं। सभापति जी, मेरा आपसे निवेदन है कि हमें यह इसलिए भी करना जरूरी है, जहां दुनिया भर के देश आज मैरीजुआना वगैरह को लीगलाइज करके टूरिज्म को अट्रैक्ट करते हैं। अमेरिका से लेकर, कैरीबियन आइलैंड से लेकर, अब तो कनाडा से लेकर बाकी यूरोप के देश भी कर रहे हैं। उनको लगता है कि जो इल्लिगल ट्रेड होता है, उसके कारण बहुत सारे आतंकवाद की गतिविधियां भी बढ़ती हैं और इकॉनोमी में से पैसा भी जाता है। लोगों ने उसको लीगलाइज करने का काम किया है, उसके मेडिकल बेनिफिट्स पर देखने का काम किया है। दुनिया भर के देश नए-नए तरीके टूरिज्म को प्रमोट करने लिए ढूंढ रहे हैं। हमारे पास तो दिखाने के लिए यहां पर इतना कुछ पहले से ही है। हम उसका भी विस्तार नहीं कर पा रहे हैं, उसका उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। मैं एक छोटा सा उदाहरण देता हूं, जैसे स्पोर्ट्स। स्पोर्ट्स में हमने

आई.पी.एल. शुरू किया। क्या आपको कल्पना है कि इससे कितना रोजगार उत्पन्न होता है? क्या आपको कल्पना है कि इससे कितने लोग विदेशों से भारत में मैच देखने आते हैं, इससे कितने लोगों के लिए उन दो महीने के अंदर रोजगार-स्वरोजगार के अवसर मिलते हैं, उसके माध्यम से हम कितने और स्थानीय स्थलों को दिखाने का अवसर प्रदान करते हैं? यह एक बहुत बड़ा अवसर हमारे पास है। मुझे लगता है कि इसके माध्यम से हम बहुत कुछ कर सकते हैं। अगर हम अमेरिका की बात करें...

HON. CHAIRPERSON : Shri Anurag Singh Thakur, please conclude now.

... (*Interruptions*)

SHRI ANURAG SINGH THAKUR : Sir, please give me 15 minutes more to speak.

HON. CHAIRPERSON: No, you have already taken about 25 minutes to speak.

SHRI ANURAG SINGH THAKUR: No, Sir. I have just started, and I have taken only 15 minutes or so to speak.

HON. CHAIRPERSON: Other hon. Members are also eagerly waiting to express their views on this issue.

SHRI ANURAG SINGH THAKUR : Sir, I will wait for them also till 7 o'clock.

Other issue is, what are the possibilities? हमारे पास बहुत सारे अवसर हैं। जब निशिकांत जी बोल रहे थे, मैं बैठे-बैठे लिख रहा था। माननीय मंत्री जी, मेरे मन में बात थी कि हम दुनियाभर को सॉफ्टवेयर देते हैं। हमने आईटी के क्षेत्र में बड़े-बड़े कदम उठाए हैं। लेकिन ऐसा क्यों नहीं है कि विदेश से जब कोई व्यक्ति आए तो हवाई जहाज, रेल, बस, टैक्सी या कोई भी साधन हो, उसके एक बारकोड स्कैन से उसको हर जगह एंट्री मिल जाए। यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। हमें इसको प्राथमिकता के साथ करना चाहिए। हमें इससे बहुत ज्यादा लाभ मिलेगा। टेक्नोलॉजी से भी हो सकता है और बारकोड स्कैन करके भी हो सकता है। गॉल्फ खेलने के लिए जापान और दुनियाभर से लोग अमेरिका जाते हैं, क्या हिन्दुस्तान उसका एक बड़ा हब हो सकता है?

अक्षरधाम जैसे टेम्पल या अन्य टेम्पल्स हैं, जो आज दुनिया में आकर्षण का केन्द्र हैं। यूएस के एम्बेसडर वहां गए थे। उन्होंने बताया कि उनका वहां कैसा अनुभव रहा। क्या आप ऐसा ही सभी एम्बेसडर्स का दौरा वहां करवा सकते हैं ताकि वे ट्विटर पर डालें? आप उनके साथ अक्षरधाम जाइए, ताज महल देखने जाइए, उनको

अलग-अलग जगह दिखाने के लिए आपके अधिकारी जाएं, राज्य के मंत्री जाएं। क्या हम साइक्लिंग ट्रैक बना सकते हैं? दुनिया भर के लोग आज हेल्थ कॉन्श्यस हो गए हैं। हिन्दुस्तान के युवाओं को शहरों में साइक्लिंग करने का अवसर नहीं मिलता है। हमारे पहाड़ों पर लोग ट्रैकिंग के लिए आते हैं और ट्रैकिंग करते समय उनकी मृत्यु हो जाती है तो क्या हम सैटेलाइट से उनकी ट्रैकिंग का कोई सिस्टम बना सकते हैं, ताकि किसी व्यक्ति की मृत्यु न हो। अडवेंचर स्पोर्ट्स चाहे वॉटर के हों या जंगल के हों या रेगिस्तान के हों, इन क्षेत्रों में हम कितना रोजगार उत्पन्न कर सकते हैं? क्या इस पर आपके डिपार्टमेंट ने कभी कोई सर्वे किया है? सर, इस देश का दुर्भाग्य है कि जब हम स्पोर्ट्स की बात करते हैं तो स्पोर्ट्स मंत्रालय को पता नहीं होता है कि किस जिले में क्या इंफ्रास्ट्रक्चर है, कितने खिलाड़ी वहां खेलने वाले हैं और कितने कोच उपलब्ध हैं? यदि टूरिज्म डिपार्टमेंट की बात करें तो उन्हें पता नहीं होता है कि कितने टूरिस्ट गाइड हैं, कितने टूरिस्ट डेस्टिनेशन हैं और कितनी हमारे पास कनैक्टिविटी से लेकर बाकी सुविधाएं हैं? जब तक हमारे पास आंकड़े नहीं होंगे, हम इस दिशा में काम नहीं कर पाएंगे और मुझे लगता है कि हमें उस दिशा में काम करने की आवश्यकता है। मुझे जेनेवा में बार-बार जाना पड़ता है, मुझे ब्रसेल्स डब्ल्यूटीओ की मीटिंग अटेंड करने, इंटर-पार्लियामेंटरी यूनियन की मीटिंग अटेंड करने के लिए जाना पड़ता है। वहां लेक के किनारे दौड़ने के लिए ट्रैक बनाया हुआ है, कोई आइसक्रीम बेच रहा है, कोई ओल्ड विलेज अपनी हेरिटेज दिखाने की बात कर रहा है। मैं गुजरात के चुनाव में पोरबंदर गया। पोरबंदर की जितनी हेरिटेज बिल्डिंग्स हैं, उनको रीयल एस्टेट डेवलपर्स तोड़ रहे हैं। राज्य और देश की सरकार उस पर क्या कार्रवाई कर रही है?

चम्बा में चौगान के सामने पुरानी हेरिटेज बिल्डिंग्स हैं। लोग उनको तोड़ रहे हैं, क्योंकि सरकार की ओर से कोई फण्ड अवलेबल नहीं है। मेरे चम्बा का रुमाल दुनिया भर में जाना जाता था, मेरे हिमाचल की ज्वैलरी दुनिया भर में जानी जाती थी, मेरे हिमाचल के शोभा सिंह की पेंटिंग दुनिया भर में जानी जाती थी, आज वह सब कहां है? रोड्रिग्स आर्ट गेलरी, वहां रशिया के बहुत बड़े पेंटर आकर रहे। वह सब कहां पर है? हमने न उनको बचाने का प्रयास किया है और न ही बढ़ाने का प्रयास किया है। क्या इंडिया-रशिया कल्चर सेंटर मिलकर रोड्रिग्स आर्ट गेलरी पर काम कर सकते हैं? क्या शोभा सिंह की पेंटिंग्स को रिवाइव करने पर हम काम कर सकते हैं? क्या चम्बा रुमाल पर हम कोई काम कर सकते हैं? अगर कर सकते हैं तो मैं चाहूंगा कि जो लोकल आर्टिजन्स हैं, उनके लिए हमें काम करना चाहिए। लोकल ज्वैलरी में आप देखिए कि आज लोग पुरानी तरह के कपड़े पहनते हैं। यदि किसी के घर में शादी होती है तो आज की दुल्हन अपनी ग्रैंड मदर की साड़ी निकालकर पहनती है। किसी बड़े डिजाइनर के पास नहीं जाती है, केवल उसका बॉर्डर चेंज करवाती है। अपनी दादी की ज्वैलरी पहनती है। क्या हम इस सबको खत्म होने देंगे? मेरा आपसे अनुरोध है कि हम दुनिया भर को अपना यह पक्ष भी दिखा सकते हैं और अगर हम आर्टिजन्स से बायबैक गारंटी के लिए एक फण्ड क्रिएट करें तो आप देखेंगे कि गांवों में रोजगार और स्वरोजगार के बहुत सारे अवसर बन पाएंगे।

हिमाचल की टोपी एक पैटर्न से बनती है, दो पैटर्न से बनती है। भूट्रिको ने उस पर बहुत काम किया है। क्या टूरिज्म मंत्रालय और कल्चरल मंत्रालय मिलकर शाल का डिजाइन चेंज कर सकते हैं। मैंने यह जो पट्टी पहन रखी है, इसके और किस तरह के डिजाइन बनाए जा सकते हैं, वह आप बता सकते हैं। We could be a big export hub. केवल टूरिस्ट या देश के अंदर बेचने के लिए ही नहीं, टूरिज्म को भी बढ़ावा मिलेगा और हम उसको आगे कर पाएंगे। हमारे जो गद्दी हैं, जो बेचारे भेड़-बकरी लेकर सारी जगहों पर जाते हैं, उनको भी पहले से ज्यादा पैसा मिल पाएगा।

सभापति जी, यही नहीं, निशिकान्त जी ने बहुत विस्तार में और बहुत अच्छी-अच्छी बातें कहीं हैं। एक बात उन्होंने कही है कि अंग्रेजों ने बहुत बड़ा इन्फ्रास्ट्रक्चर बना दिया था, लेकिन उसके बाद कांग्रेस ने आकर बेड़ा गर्क कर दिया। मैं इनसे बिल्कुल सहमत हूँ। आप देखिए कि जब बड़ी-बड़ी मशीनें नहीं थीं, तब भी कालका से शिमला रेलवे लाइन अगर किसी ने बनाई है, तो वह अंग्रेजों ने बनाई है। पठानकोट से जोगिन्दर नगर की नैरो गेज रेलवे लाइन किसी ने बनाई है, जोगिन्दर नगर जो मेरा ससुराल है, वहां पर भी उसे अंग्रेजों ने बनाया है। बरोट में एक सीधी ट्राली चढ़ती है, रेल की तरह, एक रेल ट्रैक बना हुआ है। हिन्दुस्तान में 70 सालों के बाद भी उसे कोई नहीं बना पाया है।

मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ कि क्या इस नेरो गेज रेलवे लाइन पर हम कोई ऐसी ट्रेन चला सकते हैं, जो हाईएंड हो, जो आम आदमी के लिए अलग चलाई जा सके, ज्यादा रेवन्यू जेनरेट किया जा सके। उसमें एक अलग अट्रैक्शन हो। मान लीजिए कि अंदर ही आप लोकल डांसर्स को, लोकल फोक सिंगर्स को करें, तो उनको भी वहां पर रोजगार मिल सकता है। जालंधर में एक व्यक्ति है, उसने हवेली के नाम से एक रेस्टोरेंट शुरू किया है। उसने पंजाब के कल्चर को वहां लाकर खड़ा कर दिया है। वहां पर रोज नए-नए आर्टिस्ट और डांसर्स आते हैं। उनको भी रोजगार मिलता है और पंजाब का खाना भी वहां पर मिलता है। चोखी ढाणी धानी जयपुर के बार्डर पर है। क्या हम ऐसी जगहों के लिए और ज्यादा कर सकते हैं।

दूसरा, इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी के जमाने में, डिजिटल एज में सोशल मीडिया में आप अपने हैंडल का एक बार आकलन करिए। हम कितने फॉरेन टूरिस्ट को उस पर अट्रैक्ट कर पा रहे हैं? आप कितनी बार ट्रेन्ड करते हैं, कुछ ऐसी चीज दिखाकर जो आकर्षण का बड़ा केन्द्र हो।

महोदय, यही नहीं, अंडमान-निकोबार की बात किए बिना, मैं रह नहीं पाऊंगा। गोवा में तो टूरिस्ट आते हैं। 14 लाख की आबादी में भी वहां पर... (व्यवधान) गोवा में 14 लाख की आबादी होगी या नहीं होगी, कम होगी... (व्यवधान) गोवा में उससे कई गुना ज्यादा टूरिस्ट आते हैं। अंडमान-निकोबार में ट्राईब्स हैं, फारेस्ट हैं, बीचेस हैं।

One of the most pristine beaches in the world are there. हमारे पास वहां पर जो कोरल्स हैं, जो वहां की 'सी' लाईफ है, उसको देखने के लिए हम दुनिया भर के लोगों को ला सकते हैं। वहां क्रोकोडाइल पार्क है। वहां पर स्कूबा डाइविंग्स हैं, वहां नीचे ट्रेनिंग स्कूल्स खड़े किए जाएं। काम्पिटिशन क्रिएट करवाए जाएं। अगर आप अंडमान-निकोबार को एक हब बना दें कि जो फ्लाइट्स यूरोप से उड़ती हैं, वे वहां पर लैंड होकर जापान जाएंगी, आस्ट्रेलिया जाएंगी और बाकी जगहों पर जाएंगी। वहां 95 प्रतिशत रिजर्व फारेस्ट रखिए और जो बाकी 5 प्रतिशत है, वहां पर आप हजारों करोड़ रुपये साल का इस देश के रेवन्यू के लिए इक्वटा कर सकते हैं। सिंगापुर से भी बड़ी इकोनामी हम वहां से खड़ी कर सकते हैं, जहां पर आज तक कोई काम पहले नहीं हुआ है।

वहां पर हम रिजॉर्ट्स बनाने की बात करें, कसीनो से लेकर। आज वीर सावरकर की बात शिवसेना के मेरे एक भाई ने की है। सेलुलर जेल की बात की है, वहां पर भी लाइट एंड साउंड शो हमने शुरू किया, किसी और ने नहीं किया है। हमने वहां की फ्लाइट्स भी बढ़ाई हैं। डिगलीपुर में कोई फ्लाइट नहीं जाती थी। हमारी सरकार में डिगलीपुर के लिए फ्लाइट शुरू करने के लिए मैंने वहां पर बात की। हमारे वहां के जो साथी और जो पार्टी के लोग आए, उनके कहने पर और हमारे सांसद विष्णु पद राय जी के कहने पर की है। यही नहीं, यह कहने के लिए छोटी बातें लगती हैं। मैं पहाड़ी राज्य से आता हूं, ट्रांस हिमालयन रीजन देखिए। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और नार्थ ईस्ट के राज्यों में एक जैसी संस्कृति है। हॉर्नबिल फेस्टिवल आप वहां पर देखिए या हमारे हिमाचल या उत्तराखंड या जम्मू-कश्मीर का देखिए। वहां के फेस्टिवल, लद्दाख और लेह का, आडवाणी जी बहुत बार वहां पर जाते थे।

आप सिंधु वैली को ही लीजिए। हमारे क्षेत्रों को देखने के लिए कई-कई घंटे सफर करना पड़ता था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने टनल बनाने का काम शुरू किया, जो हमारी फौज की भी बहुत मदद करेगा। यहां जनरल वी.के.सिंह साहब बैठे हैं। उस टनल से हम मनाली से लेह-लद्दाख और लाहौल-स्पीति को जोड़ेंगे।

HON. CHAIRPERSON: Please try to conclude.

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : उससे एक नई घाटी खुल जाएगी, एक नई दुनिया खुल जायेगी। उसे अटल जी ने शुरू किया था और मोदी जी उसका उद्घाटन करने वाले हैं। अटल जी ने कश्मीर के लिए रेलवे लाइन शुरू की, मोदी जी ने उसकी शुरुआत की।

मैं अंत में इतना कहूंगा, क्योंकि मेरे बाकी साथियों ने भी बोलना है। मैं आपकी बात मान रहा हूं, हालांकि अभी मेरे पास 25-30 कागज और हैं, लेकिन मैं उनमें नहीं जाऊंगा। मैं केवल इतना कहूंगा कि मेरे अपने साथियों को भी बोलना है, मैं चाहता हूं कि वे भी अपने-अपने राज्यों की बातें बोलें। गुजरात के शेर जो वहां पर दिखते हैं,

क्या हम उन्हें दुनिया को नहीं दिखा सकते? क्या राजस्थान के डेजर्ट से लेकर हवेली और बाकी सब नहीं दिखा सकते? हमें एक प्रयास सच्चे दिल से करना चाहिए और हमें इसके लिए कारपोरेट को आगे लाना चाहिए। आज शेखर गुप्ता जी ने एक ट्वीट किया था कि जिस तरह से आपने दिल्ली-मुम्बई में कुछ जगहों को कारपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी में खड़ा किया, म्यूजियम तैयार किये तो आप बाकी जगहों पर भी इसे करके दिखाइए।

मैं केवल इतना अनुरोध करना चाहूंगा कि निशिकान्त जी जो बिल लाये हैं, आप इसे प्राइवेट मैम्बर बिल तक सीमित मत रहने दीजिए। 130 करोड़ के भारत में जो अपार संभावनाएं हैं, जो भारत की संस्कृति है, जो भारत का प्राकृतिक सौंदर्य है, जो हमारे रिलीजियस डेस्टिनेशंस हैं, जो हमारे एडवेंचर स्पोर्ट्स के लिए एक्टिविटीज के अलग-अलग केन्द्र हो सकते हैं, उनसे करोड़ों लोगों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न हो सकते हैं। इस बिल के माध्यम से एक नई दिशा देने का जो काम निशिकान्त दुबे जी ने किया है, मैं इसके लिए उनका कोटि-कोटि धन्यवाद करना चाहता हूं। निशिकान्त जी ने केवल इस सदन में ही नहीं, मुझे पता है आपने जो बहुमूल्य सुझाव दिए हैं और मेरे बाकी साथी अपने-अपने सुझाव यहां देने वाले हैं, उनमें जुगल किशोर जी, श्री पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल, श्री अर्जुन सिंह मेघवाल, श्री भैरों प्रसाद मिश्र तथा साहू जी यहां बैठे हैं। यद्यपि ये पहली बार चुनकर आए हुए सांसद हैं, लेकिन लगातार यहां पर रहते हैं, लगातार बोलते भी हैं। इसलिए मैं इनका बहुत स्वागत करता हूं।

सर, आप देखिये, जब इन सबके सुझाव आएंगे, कोणार्क टैम्पल, पुरी के बीच से लेकर हमारे ट्राइबल क्षेत्र जहां कोई जाता नहीं, मणिपुर के इम्फाल से लेकर हिमाचल प्रदेश के चम्बा, डलहौजी, धर्मशाला तक सब स्थलों को लीजिए। निशिकान्त जी ने बहुत उदार हृदय से मेरे स्टेडियम के बारे में कहा। मैं केवल इतना कहूंगा कि तब मैं केवल 27 वर्ष का था, जब मैंने वह स्टेडियम बनवाया। मुझे लोग कहते थे कि यह थोड़ा दीवाना सा है, जेब में पैसा नहीं स्टेडियम कहां से बनेगा। लेकिन जहां पर जुनून हो, जहां इच्छाशक्ति हो, वहां सब संभव होता है। जहां चाह, वहां राह। आप चाह रखिये, राह अपने आप बनती जाएगी। यह पूरा सदन मंत्री जी आपके साथ खड़ा है। आप इस बिल को पूरे दिल के साथ अपनाइये। हम इस भारत में करोड़ों लोगों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न करेंगे। मेरा हिमाचल भी पर्यटन की दृष्टि से कई गुना आगे बढ़ेगा। निशिकान्त जी, झारखंड में देवघर आपने दिखाया, आप मुझे वहां लेकर गए। हम जम्मू-कश्मीर में अमरनाथ यात्रा पर गए।

HON. CHAIRPERSON: Shri Jugal Kishoreji is there to speak about Jammu & Kashmir.

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : देवघर से लेकर अमरनाथ यात्रा तक गए। हमारे इंदौर में या बाकी अन्य स्थान हों, इनमें अपार संभावनाएं हैं। मेरा आपके माध्यम से यह निवेदन है कि टूरिज्म को अनदेखा नहीं करना चाहिए। टूरिज्म कारपोरेशन ऑफ इंडिया में जो कोर्पस फंड 5 हजार करोड़ रुपये बनाने की बात कही गई है, उसे पूरा करना चाहिए।

और टूरिज्म को प्रायोरिटी लिस्ट में लाकर खड़ा करना चाहिए। इस टूरिज्म मंत्रालय के लिए आप अपना मन छोटा मत करिए कि आपको छोटा मंत्रालय दिया गया। यह इतना बड़ा मंत्रालय है, जिससे आप करोड़ों लोगों को भला कर सकते हो तथा भारत को आगे ले जा सकते हो।

महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभार प्रकट करता हूँ और निशिकान्त दुबे जी का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। जय भारत।

श्री भैरों प्रसाद मिश्र (बांदा): सभापति महोदय, आज माननीय निशिकान्त दुबे जी ने देश में पर्यटन का संवर्धन और विकास करने के लिए भारतीय पर्यटन संवर्धन निगम की स्थापना करने का जो विधेयक पेश किया है, मैं उसके समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। मैं बधाई देना चाहता हूँ कि उन्होंने ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर विधेयक लाने का काम किया है।

उन्होंने विस्तृत रूप से बातें रखने का काम किया है। मैं उन सब बातों से अपने को जोड़ता हूँ। अभी हमारे माननीय अनुराग ठाकुर जी ने भी विषय रखा है, मैं उन विषयों से भी अपने का संबद्ध करता हूँ और उस विषय पर मैं बहुत ज्यादा नहीं जाऊंगा। मैं समझता हूँ कि थोड़ा समय कम है तो मैं अपने क्षेत्र संबंधित बोलूंगा। मैं उत्तर प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र से आता हूँ। उत्तर प्रदेश में हमारा जो चित्रकूट धाम है, वह पर्यटन के क्षेत्र में, जब से उत्तराखण्ड उत्तर प्रदेश से अलग हुआ है, तब से उसको चाहे हिल स्टेशन कह लीजिए, चाहे धार्मिक पर्यटन स्थल कह लीजिए या पौराणिक स्थल कह लीजिए, वह बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। जहां पर देश विदेश से प्रतिदिन हजारों यात्री आते हैं और अमावस्या के दिन तो इतना बड़ा मेला लगता है कि जिसमें लाखों लोग आते हैं।

जैसा माननीय निशिकान्त जी कह रहे थे कि देवघर में श्रावणी के समय करोड़ों लोग आते हैं, पूरे महीने भर मेला चलता है। वैसे ही चित्रकूट में दीपावली का जब मेला चलता है, एक हफ्ते का होता है तो वहां पर लाखों लोग पूरे सात दिन तक आते हैं और बहुत बड़ा मेला प्रतिवर्ष लगता है। मैं ऐसे चित्रकूट क्षेत्र के विषय को बताना चाहता हूँ। आज वहां पर जो कामदगिरि पर्वत है, वहां के लोग उसके चारों तरफ परिक्रमा देते हैं, जैसे मथुरा में, वृंदावन में पंचकोसी परिक्रमा की जाती है, ऐसे ही चित्रकूट में भी कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा दी जाती है। वह बहुत पवित्र माना जाता है और उसको ले कर कहा जाता है कि “कामदगिरि भए राम प्रसादा, अवलोकत भरत बिसादा।” गोस्वामी तुलसीदास जी की चौपाइयों में कहा गया है कि कामदगिरि के पर्वत को देखने मात्र से ही विषाद दूर हो जाते हैं। इसीलिए वहां पर लोग हजारों की संख्या में आते हैं। मान्यवर, वहां पर रामघाट है, जहां पर गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण की रचना की थी। भगवान राम भी रामघाट पर आए थे और वहां पर कहा गया है कि

“चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीड़,

तुलसीदास चंदन घिसे, तिलक देत रघुवीरा”

उस समय भगवान राम भी तिलक दे कर, वहां पर रूप धर कर आए थे। वहां पर मदगंजन स्वामी का मंदिर है, जिस पर शंकर जी की बहुत बड़ी पीठ मानी जाती है। मान्यवर, ऐसा पवित्र स्थान चित्रकूट धाम है। वहीं पर पवित्र मंदाकिनी नदी निकलती है, जिसको कहा जाए, जो माँ अनुसुइया का आश्रम है और वहां भगवान अत्री जी हैं, जो महेश अत्री हैं, वहां पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी बाल रूप में हैं, वहां पर माँ अनुसुइया ने बाल रूप में उनकी सेवा करने का काम किया था। वहां तब से मंदाकिनी नदी निकलती है, जिसको गंगा के समान पवित्र माना जाता है। मैं केन्द्र सरकार का आभारी हूँ कि उन्होंने मंदाकिनी नदी को भी पवित्र नदी के रूप में, जैसे गंगा और यमुना को लिया है, वैसे मंदाकिनी नदी को भी पवित्र मान कर के उसको भी उसी सूची में शामिल किया है, जिसको वे संवर्धन करने का काम करेंगे।

मान्यवर, मैं आप सबसे कहना चाहता हूँ कि वहीं पर हनुमान धारा है। हनुमान धारा का बड़ा महत्व है। वहां पर कहा गया है जब लंका को वे अपनी पूछ से जला कर आए थे, तो वहीं हनुमान धारा में, उसी धारा में उनकी पूँछ ठण्डी हुई थी, उनकी ज्वाला शांत हुई थी। ऐसा स्थान हनुमान धारा है। वहीं पर हमारी गुप्त गोदावरी है, अगर उसको देखा जाए, गुप्त रूप से गोदावरी प्रकट होती हैं, फिर निकल कर पूरे मैदान पर जाती है। वहां पर जिस तरह से प्राकृतिक गुफाएं हैं, उनको देश-विदेश से लोग देखने आते हैं। वहां पर हमारे यहां स्फटिकशिला है, जहां कहा गया, रामायण में वृतांत आया है कि वहां पर काग ने चोंच मारी थी। वहां पर भगवान राम और सीता बैठ कर विहार कर रहे थे तो काग चोट मार कर भागा था। ऐसी स्फटिकशिला, पवित्र स्थान वहां पर है। चित्रकूट ऐसा स्थान है, जहां भगवान राम ने साढ़े 12 वर्ष अपने वनवास काल के बिताए थे, इसीलिए उसकी महत्ता है। वहां पर एक लक्ष्मण पहाड़ी है। जहां पर रह कर वे भगवान राम की रक्षा करने का काम करते थे। वह लक्ष्मण पहाड़ी वहीं से कामदगिरी पर्वत के बगल से बनी हुई है।

माननीय महेश शर्मा जी अभी आए थे, मैं उनका आभारी हूँ। पर्यटन मंत्रालय उनके पास था, आज उनके पास संस्कृति मंत्रालय है। उन्होंने रामायण सर्किट, जो अयोध्या से लेकर चित्रकूट तक पूरा रामायण, श्रृंगवेरपुर को, सब को बनाकर एक रामायण सर्किट बनाने का काम किया है, उसके लिए 125 करोड़ रुपये से ज्यादा का धन देने का काम किया है, जिससे उनका विकास हो रहा है। मेरे संसदीय क्षेत्र में कालिंजर का किला आता है, उन्होंने उसके संवर्धन के लिए 8 करोड़ रुपये दिए, इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। माननीय पर्यटन मंत्री जो यह कार्य देख रहे हैं, हमारे सामने बैठे हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि उसका कोई शिलान्यास नहीं हुआ है। उस काम के लिए आठ करोड़ रुपया दिया गया था, उसका शुभारम्भ कराने की कृपा करें। मैं इसके लिए कई बार लिख चुका हूँ।

आपके यहाँ से आठ करोड़ रुपये गया है, वह स्वीकृत है। विभाग के लोग उसका सर्वे करके देख आए हैं, वह काम क्यों नहीं शुरू हुआ है।

कालिंजर का किला बहुत ही महत्वपूर्ण है, जो पूरे देश-विदेश में जाना जाता है। उसके कार्यों का शुभारम्भ कराने का काम करें, जो रामायण सर्किट से संबंधित कार्य है। हमारे माननीय मुख्य मंत्री जी वहाँ गए थे, वहाँ पर कुछ चीजों का शुभारम्भ किया था, लेकिन रामायण सर्किट के अभी कार्य बाकी हैं। लक्ष्मण पहाड़ी पर रोप-वे बनकर तैयार है, वह शुभारम्भ के लिए इंतजार कर रहा है। यह वहाँ पर केन्द्र सरकार के पैसे से बना हुआ है। उस रोप-वे का भी शुभारम्भ करें, जिससे यात्रियों को लाभ हो सके। वहीं पर हमारा राजापुर है, जहाँ पर हस्तलिखित रामायण रखी है। राजापुर स्थान मेरे संसदीय क्षेत्र में आता है, जहाँ पर गोस्वामी तुलसीदास जी की हस्तलिखित रामायण की पांडुलिपि रखी हुई है, जिसको लोग देखने के लिए देश-विदेश से जाते हैं। उसके संवर्धन के लिए भी वहाँ पर कार्य हुआ है। एक वाल्मीकि आश्रम है जो वाल्मीकि जी के नाम पर है। आज अशोक सिंघल जी नहीं हैं। अशोक सिंघल जी उसका विस्तार करने के लिए प्रयासरत रहते थे। माननीय पर्यटन मंत्री शर्मा जी और अशोक सिंघल जी ने, सब ने मिलकर उसकी एक योजना बनाने का काम किया था। वाल्मीकि आश्रम भी चित्रकूट जनपद में आता है। राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे हैं, उसका कैसे विकास हो, इससे संबंधित योजना आपके यहाँ पड़ी हुई है, इसको करने का काम करें।

मैं नाना देशमुख जी का आभारी हूँ। भारत रत्न नाना देशमुख जी ने गोंडा के बाद चित्रकूट को गोद लेकर विकास करने का काम किया। अयोध्या धाम से लेकर उन्होंने तमाम चीजें वहाँ देने का काम किया है। स्वामी रामभद्राचार्य जी, जिनको भारत सरकार ने पद्म विभूषण से सम्मानित किया है, मैं इस अवसर पर उनको भी नमन करना चाहता हूँ कि जिन्होंने उसको केन्द्र बनाकर हमारे यहाँ तुलसीपीठ की स्थापना की और भी बहुत सी चीजें करने का काम किया है। मैं ऐसे महापुरुषों को नमन करता हुआ, आपसे केवल एक चीज़ कहना चाहता हूँ कि ऐसे बहुत से स्थान हैं, जैसे हमारे यहां गुढ़ा है, गिरवां के पास विंध्यवासिनी मंदिर है।

सर, बस दो-चार मिनट में अपनी बात को कन्क्लूड करता हूँ। मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूँ, मेरे साथी पुष्पेन्द्र जी बैठे हैं, समय मिलेगा तो बोलेंगे। मैं बात कह देता हूँ कि बुंदेलखंड क्षेत्र पूरा एक पर्यटन हब बन सकता है, जहाँ पर बहुत कुछ है। आज बुंदेलखण्ड क्षेत्र को पर्यटन हब बनाने की ज़रूरत है, इसके लिए आप विशेष तौर से प्रयास करने का काम करें। योजना लाने का काम करें। मैं माननीय गडकरी जी का आभारी हूँ, मुझे भी रहना था, चूँकि आदत है जैसा माननीय प्रधान मंत्री जी ने कहा था कि सदन में उन्होंने माथा टेक कर किया था, हम लोगों ने भी सदन को मंदिर माना है। सभापति जी, मैं बताना चाहता हूँ कि मैंने कोशिश की है कि पाँच साल में एक दिन भी गैर हाजिर न हूँ। अगर मैं वहाँ अयोध्या जाता, वहाँ राम वन गमन मार्ग का शुभारम्भ हो रहा है, आज वहाँ पर

अयोध्या से चित्रकूट तक के लिए राम वन गमन मार्ग देने का काम किया है, उसका शुभारम्भ हुआ है। मैं गैर हाजिर न हो जाऊँ इसलिए मैं गया नहीं हूँ। आज यहाँ उपस्थित हूँ। मैं आज इसके लिए भी बधाई देना चाहता हूँ। उसका शिलान्यास हुआ है, शीघ्र ही उसका काम पूरा होगा। मैं दूसरी चीज़ मंदाकिनी की सफाई के लिए और कहना चाहता हूँ। माननीय पर्यटन मंत्री जी गए थे, एक मशीन कह कर आए थे, वह मशीन अभी वहाँ पहुँची नहीं है। वह कहाँ अटकी हुई है, उसको भिजवाने का काम करेंगे, तो वह मशीन रहेगी। एक चीज़ कहकर अपनी बात को समाप्त करूँगा कि जो चित्रकूट है, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश दो भागों में बंटा हुआ है। इसको एकीकृत करके उसको फ्री किया जाए। जैसे ट्रांसपोर्ट के लिए लोगों को वहाँ पर परमिट लेना पड़ता है, यूपी-एम्पी में जाने के लिए, तो उसको फ्री जोन बनाकर वहाँ पटवा जी और कल्याण जी ने जब दोनों हमारी सरकारें थीं, उन्होंने यह योजना बनाई थी। उसको फ्री जोन घोषित करके व्यवस्था करने का काम करें। वहाँ से हमारी हवाई सेवाएँ शुरू होने वाली हैं। उसकी जुलाई डेडलाइन की गई है। मैं कहना चाहता हूँ कि जो हवाई सेवाएँ हैं खजुराहो से चित्रकूट, चित्रकूट से इलाहाबाद, इलाहाबाद से बनारस और अयोध्या, ऐसी हवाई सेवाएँ वहाँ शुरू कराने का काम करेंगे तो बहुत अच्छा होगा। अंत में एक बात कहकर कि रेलवे में...(व्यवधान)

मैं नाना जी देशमुख को पुनः नमन करता हूँ। उन्हें भारत रत्न देने का काम हमारी सरकार ने किया है। इसके लिए मैं माननीय प्रधान मंत्री जी और अपनी सरकार का बहुत आभारी हूँ कि माननीय नाना जी देशमुख को उन्होंने भारत रत्न देने का काम किया। उनको नमन करता हुए मैं केवल एक चीज़ और कहना चाहता हूँ। एक रेलवे का हॉल्ट स्टेशन चित्रकूट द्वार के नाम से, जिसका सर्वे हो चुका है, भीड़ चित्रकूटधाम नहीं जाएगी, तो हॉल्ट स्टेशन वहाँ पड़ा हुआ है। वह हॉल्ट स्टेशन चित्रकूट द्वार के नाम से शीघ्र बना दिया जाएगा, तो लोगों को सुविधा रहेगी। इसी बात को कहकर मैं निशिकान्त जी को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और यह कहना चाहता हूँ कि इस विधेयक को स्वीकार करना चाहिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री निहाल चन्द (गंगानगर): महोदय, पर्यटन विधेयक, 2015 के संबंध में चर्चा हेतु आपने मुझे समय दिया, इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करना चाहूँगा। आज सरकार ने नानाजी देशमुख को भारत रत्न दिया है। मैं अपनी तरफ से सरकार को धन्यवाद देना चाहूँगा कि इतना बड़ा काम सरकार ने किया है।

महोदय, भारत एक परम्पराओं का देश है, प्रकृति का देश है। भारत में लोग परम्परा का आदर भी करते हैं। हमारी परम्परा का आदर करना, हमारे सामाजिक जीवन की एक जड़ भी है। मैं इस मौके पर इतना कहना चाहूँगा कि पर्यटन की दृष्टि से भारत एक बहुत विशाल तरीके से आगे बढ़ सकता है। इस देश की अर्थव्यवस्था में, जीडीपी में 9.3 पर्सेंट पर्यटन की हिस्सेदारी है। हमारे यहाँ घरेलू पर्यटक और विदेशी पर्यटक धार्मिक यात्राओं में शामिल होते हैं। भारत जैसे गर्म जलवायु वाले देश में विशेष रूप से हिमालयी प्रदेश भारतीय पर्यटन में अलग भूमिका

निभाते हैं। उत्तर भारत और दक्षिण भारत में निवास करने वाले सभी लोगों के आकर्षण का यह केन्द्र है। प्राचीन स्मारक अवशेष अधिनियम, 1958, वर्ष 2010 में संशोधित 20 (ए) के अनुसार प्राकृतिक स्मारक से 100 किलोमीटर की दूरी पर कोई भी निर्माण का कार्य नहीं कर सकता है, यह सरकार ने तय किया है। मैं माननीय मंत्री जी का धन्यवाद करना चाहूंगा कि इस बिल में वे कितना सहयोग करेंगे और अगर वे अधिक से अधिक सहयोग करेंगे, तो मैं समझता हूँ कि पर्यटन की दृष्टि से इसमें बहुत कुछ हो सकता है। मैं सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि हमारी ऐतिहासिक धरोहर जो प्रचुर संख्या में इस हिंदुस्तान में है, उसको और आगे बढ़ाने का काम अगर कोई कर सकता है, तो वह इनका विभाग कर सकता है।

महोदय, पिछले तीन साल से मैं भी इस कमेटी में हूँ और कमेटी की सिर्फ दो मीटिंग्स हुई हैं। आप अंदाजा लगाइए कि इस तरह से हम पर्यटन की दृष्टि से कैसे आगे बढ़ेंगे? जब पर्यटन की स्टैंडिंग कमेटी की मीटिंग ही नहीं होगी, तो हम किस तरीके से आगे बढ़ेंगे? मैं तो सिर्फ सुझाव देना चाहूंगा कि ऐसे कई क्षेत्र हैं, जहाँ पर हम लोग पर्यटन की दृष्टि से और आगे बढ़ सकते हैं।

मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि मेरा गंगानगर जिला, जो राजस्थान की सीमा पर है, सीमा पर होने की वजह से पूरे राजस्थान में रेतीले धोरे हैं। अगर दुबई से ज्यादा रेतीले धोरों को हम कहीं देख सकते हैं, तो हम राजस्थान में देख सकते हैं, लेकिन पर्यटन की दृष्टि से हम लोग वहाँ कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। वर्ष 1996 से पहले जब भैरों सिंह जी राजस्थान के मुख्य मंत्री थे और बाद में वर्ष 2013 में राजस्थान प्रदेश की मुख्य मंत्री वसुंधरा जी थी, तब हमने पर्यटन की दृष्टि से काफी पैसा ऐतिहासिक इमारतों में लगाया था। प्राचीन इमारतें, जो खंडहर हो गई थीं, उनको ठीक करने का काम अगर किसी ने किया है, तो वह हमारी सरकार ने किया है। नरेन्द्र भाई मोदी के नेतृत्व में पर्यटन की दृष्टि से हम लोग और आगे निकल सकते हैं। मैं कहना चाहूंगा कि पर्यटन की दृष्टि से ऐसे कुछ इलाके हैं, जिनको हम पर्यटन की दृष्टि से आगे ले जा सकते हैं, उनके संबंध में विशेष प्रयास इस विभाग को करना चाहिए। विभाग के अधिकारीगण को स्वयं जाकर उन्हें देखना चाहिए। जितना पैसा केन्द्र सरकार ने राजस्थान को दिया या हमारे इलाके में दिया या पर्यटन की दृष्टि से जितना पैसा सीमावर्ती क्षेत्र में दिया गया, उसका अभी तक काम भी चालू नहीं हो पाया है। जब हमारी पिछली मीटिंग थी, तो मैंने यह बात उठायी थी, हनुमानगढ़ जिले में, मेरी कांस्टीट्यूएन्सी में एक भटनेर दुर्ग है, वहाँ पर केन्द्र सरकार ने दो करोड़ रुपये दिए थे।

18 00 hrs

महोदय, उसका काम तीन सालों से चालू नहीं हुआ है। अगर पर्यटन के विषय में हम लोग इस तरीके से देखेंगे तो पर्यटन किस तरीके से आगे बढ़ेगा, यह मुझे कहने की जरूरत नहीं है।

महोदय, राजस्थान में जाहरवीर गोगा जी का एक मन्दिर है, जो भारत का सबसे बड़ा मन्दिर है। रामदेवरा का मन्दिर उत्तर भारत का सबसे बड़ा मन्दिर है। पल्लूगढ़ धाम में भी उत्तरी भारत का सबसे बड़ा मन्दिर है। जब हमारी सरकार थी, उस समय राजस्थान सरकार ने जाहरवीर गोगा जी के मन्दिर के लिए पाँच करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की थी।

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, now it is 6 o'clock. We had started the Private Members' Business at 3.34 p.m. Therefore, can we extend the time of the House by four minutes?

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

श्री निहाल चन्द: सर, मैं पाँच मिनट में अपनी बात खत्म कर दूंगा।

HON. CHAIRPERSON: You try to conclude within two minutes.

श्री निहाल चन्द: सर, वहां का भी अभी तक काम चालू नहीं किया गया है।

मेरे पड़ोस में एक खटकर कलाँ गांव है, जो शहीद भगत सिंह की जन्मस्थली है और जो पंजाब के नवाँशहर के पास है। उसका काम भी अभी तक चालू नहीं हुआ है। पहले जैसा उनका घर था, वह आज भी वैसा ही पड़ा है। उनके पुराने बर्तन, रीति-रिवाज के जो पुराने सामान थे, वे आज भी वैसे ही पड़े हैं। वहां भी सरकार ने काम चालू नहीं किया है।

महोदय, पर्यटन की दृष्टि से हम लोग राजस्थान की पुरानी इमारतों को लें। राजस्थान के ऐतिहासिक स्थल, पुराने मन्दिरों को हमें पर्यटन की दृष्टि से इसमें लेना चाहिए और केन्द्र सरकार को उसमें पैसे देने चाहिए।

सभापति महोदय, मेरे संसदीय क्षेत्र में करीब आठ हजार वर्ष पूर्व की मोहनजोदड़ो सभ्यता की कालीबंगा सभ्यता है। मैं पिछले पाँच सालों से विभाग के पीछे पड़ा हूँ और मुझे मात्र 50 लाख रुपये मिले। हिन्दुस्तान की एकमात्र सभ्यता कालीबंगा सभ्यता है। यहां पर प्राचीन बर्तन और कंकाल पड़े हैं। वे आज भी वहीं पड़े हैं। वर्ष 2003 में तो वहां से एक कंकाल भी चोरी हो गया। वहां का ऐसा सिस्टम है। मैंने उसके लिए सरकार से पैसे भी मांगे। पर, मुझे मात्र 50 लाख रुपये मिले और वह भी आज तक चालू नहीं हुआ। मैं समझता हूँ कि ऐसी प्राचीन इमारतें, ऐसी प्राचीन सभ्यता, जिसे जीवित रखने के लिए हमारे विभाग के अफसरों को वहां जाकर देखना चाहिए।

महोदय, मेरे यहां औरिजनल लैला-मजनू की एक कब्र भी है। मेरे संसदीय क्षेत्र में एक गांव हिन्दुमलकोट है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच जब लड़ाई हुई थी तो वह यहीं से शुरू हुई थी। उसे पर्यटन की दृष्टि से हम और आगे बढ़ा सकते हैं। मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि मेरी कुछ डिमांड्स हैं, इन्हें आगे बढ़ाने का काम करें।

महोदय, आपने मुझे समय दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर): सभापति महोदय, धन्यवाद।

महोदय, समय की मर्यादा है। मैं अपनी बात पाँच मिनट के अन्दर समाप्त कर दूंगा।

HON. CHAIRPERSON: You try to conclude within two minutes.

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल : महोदय, आज जो पर्यटन संवर्धन निगम विधेयक, 2015 निशिकान्त जी लेकर आए हैं, उस पर निशिकान्त जी और अनुराग ठाकुर जी ने बहुत अच्छी तरह से विषय को रखा है। जो विषय आ गए हैं, मैं उसकी चर्चा न करते हुए केवल एक बात कहूंगा।

महोदय, मैं बुंदेलखण्ड क्षेत्र से आता हूँ। मेरे यहां बहुत सेवाभावी लोग हैं। भगवान राम भी हमारे बुंदेलखण्ड में अपने वनवास के बारह वर्ष काटे हैं। नानाजी देशमुख जी, जिन्हें अभी भारत सरकार ने भारत-रत्न दिया है, वे भी चित्रकूट में रहे हैं। मैं केवल बुंदेलखण्ड की बात कह कर अपनी बात पूरी करूंगा। अन्य प्रकार के पर्यटन हैं, मगर हिन्दुस्तान में बड़ी सेवाभावी संस्थाएं भी काम कर रही हैं। वे कुछ रोगियों के लिए, अनाथ बच्चों के लिए और गौशाला के क्षेत्र में जो काम कर रही हैं, उसे दुनिया भर से लोग देखने के लिए आते हैं।

महोदय, हमारे यहां नानाजी देशमुख जी ने काम किया, स्वामी रणछोड़ दास जी ने काम किया। स्वामी रामभद्राचार्य जी, जिन्होंने विकलांग विश्वविद्यालय खोला। श्री आशीष गौतम जी, जिन्होंने कुछ रोगियों की सेवा के लिए दिव्य प्रेम सेवा मिशन की स्थापना की। ऐसी अनेक संस्थाएं हैं। मेरे क्षेत्र में हमीरपुर, महोबा, तिंदवारी, राठ, चरखारी है, जिसे बुंदेलखण्ड का कश्मीर कहा जाता है। हमारे बगल में खजुराहो है, ओरछा है। मेरे पूर्वजों के द्वारा बनाए हुए खजुराहो के जो मन्दिर हैं, वे हजारों वर्षों से हैं। वहां हजारों वर्षों से एक परम्परा चली आ रही है। वहां वीर-रस की आल्हा गायन की जो प्रतियोगिता होती है, दुनिया भर से लोग उस पर शोध करने आ रहे हैं। मैं माननीय मंत्री जी का ध्यान इस तरफ आकृष्ट करना चाहता हूँ कि पूरी दुनिया भर के लोग इस बात पर शोध कर रहे हैं कि दुनिया का ऐसा कौन-सा वीरता का एक खण्ड काव्य है, जो मौखिक रूप से जीवित है। उसे किसी ने लिखा नहीं है। रामचरितमानस को गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा, लेकिन जो आल्हा खण्ड है, जिसके वीर रस की चर्चाएं

होती हैं, पूरे विश्व के देशों से, सभी विकसित देशों से लोग आकर उस पर शोध कर रहे हैं। भारत सरकार पर्यटन के क्षेत्र में और हर क्षेत्र में बहुत बड़ा काम कर रही है।

महोदय, आदरणीय मोदी जी और योगी जी के नेतृत्व में जो कुम्भ लगा है, मैं आपसे केवल इतना ही बोलना चाहता हूँ कि कुम्भ से भी अनंत संभावनाएं पर्यटन की हैं, जैसे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने गुजरात के रण और कच्छ को डेवलप कर दिया है, जहां पहले कुछ भी नहीं था।

अंत में, मैं आपसे यही बात करना चाहता हूँ कि बुंदेलखंड में प्राकृतिक छटा, सौन्दर्य, नदियां, पहाड़, जंगल तथा झरने हैं।

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, it is time. The House stands adjourned to meet again on Monday, 11th February 2019 at 11 a.m.

18 06 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on

Monday, February 11, 2019/Magha 22, 1940 (Saka)

* Unstarred Question Nos. 987 and 1141 were deleted due to passing away of Shri Ladu Kishore Swain, a sitting Member of Lok Sabha.

* Not recorded

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

* Not recorded.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.

** Introduced with the recommendation of the President.